ISSN-0971-8443

बाल भारती

अप्रैल 2020

मूल्य : ₹15

- किताब आपके सच्चे मित्र
- कैसे मुस्कुराए धरती
- खेलो इंडिया

VISIT…

निक्की और बंटी

क्या हुआ बंटी...क्यों बुलाया मुझे? स्कूल में कोई बात हुई क्या?

हां!

आज स्कूल में टीचर जी ने मेरी पिटाई कर दी!

जबकि मैंने ऐसी कोई गलती नहीं की, इसलिए तो मुझे दुख हो रहा है!

ओह! बिना आग के धुआं! मुझे सारी बातें विस्तार से बताओ बंटी!

आज क्लास में टीचर जी आने वाली थीं! मैं कुछ ऐसा देखकर चौंक गई कि पूछो मत!

टीचर जी की कुर्सी पर मैंने देखा कि ढेर सारा गोंद गिरा हुआ है। यह किसी की शरारत भी हो सकती थी!

तो तुमने क्या टीचर जी को इससे बचा लिया!?

हां! वर्ना उनकी साड़ी गोंद से चिपककर खराब हो जाती!

मैंने टीचर जी के बैठने से पहले ही पीछे से कुर्सी खींच दी और वह....

वहहहह....

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 72 : अंक : 11 पृष्ठ : 56 | चैत्र-वैशाख 1942 | अप्रैल 2020

लेख

अवसर एक पर्व अनेक	शकुन्तला माथुर	10
खेलो इंडिया	सोनी कुमारी	15
स्वतंत्रता, समता और नागरिकों की गरिमा	सुभाष कश्यप	20
कस्तूरबा	विश्वास पाटील	24
गणित की दुनिया का बादशाह : रामानुजन	मनीषा	27
भीमराव आम्बेडकर : जन्म और प्रारंभिक जीवन	प्र. वि.	38

कहानियां

किताब आपके सच्चे मित्र	प्रियंका	6
कैसे मुस्कुराए धरती	नवनीत कुमार गुप्ता	12
राष्ट्रीय समर स्मारक	कल्पना श्रीवास्तव	17
अप्रैल लिली	नरेन्द्र देवांगन	22
कनॉट सर्कस	प्रकाश मनु	40
अपने पैरों खड़े होने का सुकून	सुषमा जुगरान ध्यानी	45
बेटियां सूरज की	मनोहर चमोली 'मनु'	49

कविताएं

बेटियां	ऋषि मोहन श्रीवास्तव	9
समृद्ध धरती का मूलमंत्र	विजय के. सिंह	53

महान कवि : महान कविताएं

जागो मन के सजग पथिक ओ...	फणीश्वर नाथ 'रेणु'	28

उपन्यास

पीटर पैन		34

चित्रकथा

- उपहार में दीजिए पुस्तकें 30-33
- तुलसी 51-52

प्रधान संपादक : **राजेन्द्र चौधरी**
वरिष्ठ संपादक : **आभा गौड़**
दूरभाष : 011-24362910
व्यापार व्यवस्थापक
ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*
दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**
आवरण : **राजिन्द्र कुमार**
चित्रांकन : **प्रज्ञा उपाध्याय, शिवानी**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*
वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*
फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :
संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

बच्चो! आपने कभी यह सोचा है कि हम किताबों से हैं या किताबें हम से हैं? एक पत्रिका होने के नाते मैं यह तो कह ही सकती हूं कि आपके जीवन की प्राथमिकताओं में मेरी जगह अन्य कोई ले ही नहीं सकता, सोचो कैसे? अरे! सोचना क्या है खुद ही जानो कि तुम्हारे जीवन में तुम्हारे आस-पास सबसे ज्यादा कौन पाया जाता है। जब तुम छोटे थे तो मम्मी तुम्हें रंगीन पुस्तकें लाकर देती थीं। जिनके माध्यम से तुमने लिखना-पढ़ना सीखा, फिर आप शिक्षा के मंदिर और किताबों के घर यानी स्कूल जाने लगे। वहां विभिन्न विषयों की किताबें जैसे विज्ञान, इतिहास, भूगोल, भाषा, गणित आपकी मित्र बन जाती हैं और इसकी सहायता से अपने भविष्य की सीढ़ियों पर सफलतापूर्वक चढ़ने लगते हैं। जैसे-जैसे आपको किताबें भाने लगती हैं, उतना ही वे आपके ज्ञान, शिक्षा और क्षमता के संवर्द्धन में सक्रिय हो जाती हैं।

इसी बीच आप उपन्यास, कहानियां, चित्रकथाएं, बाल भारती आदि पढ़ते हुए अपनी आस-पास की दुनिया से न सिर्फ रु-ब-रु होते हैं वरन आपकी कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता पृष्ठों पर अपना आकार लेने लगती हैं। आप स्वयं कवि, लेखक और उपन्यासकार बन किताबें लिखने लगते हैं अथवा इन्हीं किताबों का अध्ययन कर डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, प्रोफेसर, वकील या किसी भी कार्य से जुड़े, अपना ही नहीं देश और समाज का दायित्व भी संभालते हैं। वहां भी किताबें आपके व्यावसायिक, प्रशासनिक, कानूनी और सभी तरह की जानकारियों को समेटे सदैव आपकी मदद को हाजिर रहती हैं। यहां तक की सुकून के लिए भी किताबों से बेहतर कोई नहीं।

किताबों की दुनिया अनंत है। वे कभी आपको निराश नहीं करतीं। हर पुस्तक आपसे संवाद स्थापित करती है। वे किसी न किसी रूप में आपके जेहन का हिस्सा बन जाती हैं और आपके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं।

अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस पर प्रण के साथ किताबों से अपनी दोस्ती को और प्रगाढ़ कीजिए क्योंकि उनसे बेहतर दोस्त कोई नहीं। पुस्तकों के महत्व को समझते हुए हम यानी प्रकाशन विभाग भी आपके लिए नित-नई जानकारियों से पूर्ण पुस्तकें प्रकाशित करता है। इस पुस्तक दिवस पर यहां से पुस्तकें लीजिए और उपहारस्वरूप दीजिए, अच्छा लगेगा आपको। तो इस बार पुस्तकों के साथ मनाइए विश्व पुस्तक दिवस।

आपकी बात

बाल भारती फरवरी अंक में *वसंत* मन वसंती कर गया। हम इंसान यह भूलते जा रहे हैं कि हम प्रकृति का हिस्सा हैं और प्रकृति के बगैर हमारा कोई जीवन नहीं। जिस दिन प्रकृति का आनंद लेना, उसे समझना बंद कर दिया जाएगा उसी दिन से हम हमारे विनाश की ओर स्वत: अग्रसर हो जाएंगे यह समझना आवश्यक है। *फिर वसंद आ गया* के लिए हार्दिक धन्यवाद और वसंतोत्सव की शुभकामनाएं!

–प्रत्युष मुखर्जी, चितरंजन पार्क, दिल्ली

बाल भारती फरवरी के अंक में, *जख्मी सैनिकों का फरिश्ता: एम्ब्रोज पारे* बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक लेख था। चिकित्सा जगत के अनुसंधानों का सफर विस्मित कर देने वाला है। आज भी इन क्षेत्र से नित नए अनुसंधान हैरत कर देने वाले हैं। *बाल भारती* से इसी तरह की जानकारियों और लेखो की अपेक्षा है। *वसंत, आम्बेडकर का राष्ट्रवाद, प्रणय खरे* का साक्षात्कार पसंद आया। कहानियां भी अच्छी हैं। इस अंक के लिए संपादकीय टीम को बधाई।

–हिमानी बलूनी, प्रताप विहार, गाजियाबाद

बाल भारती में *वीर सावरकर* पर चित्रकथा अच्छी थी। मैं हर अंक से चित्रकथा अलग कर के अपनी फाइल में रख लेता हूं और पेज नम्बरिंग के साथ मैंने *बाल भारती* प्रकाशित चित्रकथा में प्रदर्शित किरदारों का वर्णमाला के अनुरूप *इन्डेक्स* बनाया हुआ है। जब जिसके बारे में जानकारी चाहता हूं, उसमें देख लेता हूं। शुक्रिया *बाल भारती*।

–शुभम् कपूर, ग्वालियर, म.प्र.

हमेशा की तरह करीब दो माह की तलाश के बाद *बाल भारती* का फरवरी अंक मिला यानी दिसंबर और जनवरी अंक पढ़ने से मैं वंचित रहा। *बाल भारती* मेरी पसंदीदा बाल पत्रिका है लेकिन इसके सभी अंक मुझे अपने शहर में नहीं मिल पाते। जबकि इंदौर छोटा शहर नहीं है।

बाल भारती फरवरी अंक की सभी रचनाएं उत्तम थीं किंतु *वसंत* और *एम्ब्रोज पारे*, *गुरु नानक* और *संविधान* पर जानकारी बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक थी। आशा है आगे भी पत्रिका अपनी पहचान बनाए रखेगी।

–प्रखर भदौरिया, इंदौर, म.प्र.

बाल भारती का सदस्यता फार्म पत्रिका के अंतिम पृष्ठों में संलग्न है। उसके आधार पर हर महीने आप यह पत्रिका घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं।

–व. संपादक

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें। आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

किताब आपके सच्चे मित्र

–प्रिंयका

पंखा पूरी गति से चल रहा था। मौसम ऐसा था कि पंखे के बिना गर्मी लगने लगती थी लेकिन रूही को ठंड लग रही थी। क्योंकि रूही रशिया के जंगलों में माशा के साथ जंगली बेरीज़ इकट्ठा कर रही थी। नानी ने समझाया था कि इस जंगल के बेरी स्वादिष्ट तो होते हैं लेकिन ज़हरीले भी और ज़हरीले बेरीज़ को पहचानने के लिए उन्हें तोड़ना ज़रूरी था। तोड़े जाने पर ज़हरीली बेरीज़ का रंग सफ़ेद हो जाता था। सफ़ेद होने वाली बेरीज़ को फेंकना था और हल्के बैंगनी रंग के बेरीज़ को रखना था। माशा बेरीज़ चुनने में इतनी मगन थी कि उसने सामने खड़े भालू को भी नहीं देखा। सारे बच्चे तो भाग गए लेकिन माशा फंस गई और उस भूरे भालू ने माशा को बंदी बना लिया। बेचारी माशा पकड़ी गई...रशियन कहानियों की इन पंक्तियों ने रूही को चिंता में भी डाल दिया और नींद भी आ गई। सुबह उठते ही रूही बेकरार थी कि आख़िर माशा के साथ क्या

हुआ लेकिन अगर पढ़ने लगती तो स्कूल के लिए देरी हो जाती। पढ़ने के कार्यक्रम को शाम के लिए स्थगित किया गया और स्कूल की तैयारी शुरू हो गई।

स्कूल में स्मृति मैम ने बताया कि 23 अप्रैल विश्व पुस्तक दिवस है और उस दिन सभी बच्चों को अपने किसी भी पसंदीदा किताब के एक किरदार के बारे में क्लास में बात करनी है। अगर चाहें तो उस किरदार की तरह तैयार होकर भी आ सकते हैं। सभी बच्चे उत्साहित हो गए और कक्षा में हर तरफ़ बात शुरू हो गई- किसी ने कहा वो हैरी पॉटर का जादूगर बनेगा तो कोई बहादुर सेलर। टिनटिन से लेकर अली बाबा के बारे में बच्चे बात कर रहे थे। रूही का दोस्त रौनक़ जासूस फेलुदा बनकर आने की बात कहने लगा। तब रूही ने मन बना लिया कि रशियन कहानियां ख़त्म करने के बाद वह भी फेलुदा की जासूसी कहानी पढ़ेगी जिसकी तारीफ़ करते रौनक़ नहीं थकता था।

श...स्मृति मैम ने सबसे शांत होने के लिए कहा और फिर पूछा कि- बच्चो! क्या आप जानते हैं कि हम विश्व पुस्तक दिवस क्यों मनाते हैं? सभी चुप हो गए किसी के पास जवाब नहीं था। तब

> **"एक किताब से ईमानदार मित्र कोई नहीं हो सकता, और वह भी ऐसा दोस्त जो कभी न आपसे लड़े न नाराज़ हो।"**
>
> **–अरनेस्ट हेमिंगवे**

स्मृति मैम ने बताया- 23 अप्रैल, 1616 वह तारीख है जब महान लेखक, कवि और नाटककार विलियम शेक्सपीयर ने दुनिया को अलविदा कहा था। इसी दिन स्पेन के जाने-माने लेखक मिगेल डे सरवाटिस का भी निधन हुआ था। इन दो लेखकों के अलावा और भी कई लेखकों की पुण्यतिथि और पैदाइश की ये सालगिरह है इसलिए इस तारीख को चुना गया। स्पेन में विश्व पुस्तक दिवस एक अलग ही अंदाज में मनाया जाता है। हर साल स्पेन में 23 अप्रैल को रोज़ डे मनाया जाता था लेकिन जिस साल मिगेल का निधन हुआ उस साल लोगों ने अपने महान लेखक की याद में गुलाब की जगह किताबें बांटी। तब से ये रोज डे मिगेल की याद में बुक डे भी बन गया है। यूएन की शैक्षिक संगठन यूनेस्को ने 1995 से इस दिन को दुनिया भर के महान लेखकों को सम्मान देने के लिए चुना। दूसरा मकसद यह था कि किताबों से दूर हो रहे लोगों को इस दिन के बहाने ही किताब के करीब लाया जाए। इसलिए केवल हमारी क्लास ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल में विश्व पुस्तक दिवस से जुड़े कई कार्यक्रम होंगे। एक पुस्तक मेला भी लगेगा। स्मृति मैम ने आगे कहा- ''बच्चों मैं उम्मीद करती हूं कि आप सभी 23 अप्रैल को अपनी पढ़ी हुई किताब के किसी एक पसंदीदा किरदार के बारे में चर्चा करेंगे तो भूलिएगा नहीं। हम सभी आपकी पसंद की किताब के एक पसंदीदा पात्र को जानेंगे और क्या पता आपको किसी दोस्त की किताब का कोई पात्र इतना रोचक लगे कि आप उसकी कहानी पढ़ना चाहे- तो तैयार रहिए।''

विश्व पुस्तक दिवस के इस आयोजन को लेकर रूही भी काफी उत्साहित थी। नई किताबों और नए पात्रों के बारे में जानने का एक अच्छा मौक़ा मिलेगा। रूही को भी तय करना था कि वह किस पात्र को पेश करेगी।

घर पहुंचते ही रूही ने गृहकार्य ख़त्म किया और आज नीचे खेलना रद्द किया क्योंकि माशा को वापस

नाना-नानी तक पहुंचाना था। माशा भूरे भालू के लिए खाना बना रही थी और उसके घर की देखभाल कर रही थी। मन ही मन सोच रही थी कि भालू से छुटकारा कैसे मिले? तभी उसे एक तरकीब सूझी उसने भूरे भालू को कहा कि वह तो अब नाना-नानी से मिलने नहीं जा सकती लेकिन क्या भालू उसका बनाया केक उन तक पहुंचा सकता है। भालू राज़ी हो गया आख़िर माशा उसके घर का अच्छा ख़्याल रख रही थी। माशा ने कहा मैं तुम्हारे लिए भी अलग से तुम्हारी पसंद वाला केक बनाऊंगी इसलिए तुम नाना-नानी के हिस्से वाला केक मत खाना। मैं जंगल के पहाड़ से तुम्हें देखती रहूंगी। केक की खुशबू हर तरह से आ रही थी। भालू ने सोचा चलो जल्दी से माशा के नाना बनी तक के पहुंचा दूं फिर लौटकर मज़े से अपने हिस्से का केक खाऊंगा। भालू ने केक वाला बास्केट पीठ पर लादा और चलता गया। रास्ते में जब थकान हुई तो सांस लेने के लिए भालू रुका। उसका मन मचल रहा था केक खाने को लेकिन उसके रुकते ही माशा की आवाज़ उस तक पहुंची- ''मैं तुम्हें देख रही हूं केक मत खाना वरना मैं तुम्हारे लिए केक नहीं बनाऊंगी।'' भालू उठा और फिर चलने लगा और सोचने लगा कि माशा कि नज़रें कितनी तेज़ हैं और वह कैसे मुझपर नज़रें रख रही है। असल में माशा ने अपने आपको उस केक के बास्केट में छिपा रखा था और ग्रे भालू के रुकने पर वह वहां से बोल रही थी। भालू चलता रहा, गांव पहुंचते ही गांव वालों ने भालू को देखते ही उसे भगा दिया और जब बैग खोला तो उसमें से निकली माशा- जिसे नाना-नानी तक पहुंचा दिया गया। इसके साथ रूही ने भी राहत की सांस ली। तो बहादुर माशा के बाद अब रूही तैयार होने लगी जासूस फेलुदा बनने के लिए- यानि रौनक़ की पसंदीदा पात्र की किताब पढ़ने के लिए।

यही है किताबों की निराली दुनिया। एक पल में आप रशिया के जंगलों में जंगली भूरे भालू से बचने का रास्ता ढूंढ सकते हैं तो दूसरे पल में आप पेरिस की गलियों में एक मर्डर मिस्ट्री के सुराग ढूंढ रहे होते हैं। किताब हमें नए शब्द तो सिखाती हैं ही और हमें अलग-अलग जगह की सैर भी करवाती हैं। हम किताबों के ज़रिए कुछ नया अनुभव करते हैं ऐसे अनुभव जो हमारी रोज़ाना की ज़िन्दगी से हट कर होते हैं। किताबें आपकी कल्पना शक्ति को बढ़ाती है। किताबें हमें केवल कहानियां नहीं बल्कि हमें एक सोच देती हैं। आजकल तो हम हर तरफ़ ढेरों उपकरणों से घिरे हुए हैं। ज़रा सोचिए चाहे मोबाईल फ़ोन हो या आपका कंप्यूटर इन सबको चलाने के लिए बिजली की ज़रूरत पड़ती है। इनका चार्ज ख़त्म होते ही ये ठप्प हो जाते हैं। लेकिन किताबों का चार्ज कभी ख़त्म नहीं होता और न इन्हें कभी चार्ज करने की ज़रूरत ही पड़ती है। आपके बुक शेल्फ में किताब सालों पड़े रह सकती हैं लेकिन कभी ख़राब नहीं होती। वहीं बिजली से चलने वाले उपकरण अगर कुछ दिन इस्तेमाल नहीं हों तो ख़राब हो जाते हैं। बिजली से चलने वाले तमाम उपकरण काम करते रहें इसके लिए उन्हें चार्ज करना पड़ता है लेकिन किताबें आपकी दिमाग़ को सीधा चार्ज करती हैं।

रूही की तरह आप पंखे के नीचे बैठे रशिया के जंगलों की ठंड को महसूस करने लगते हैं, भालू द्वारा माशा को बंदी बनाए जाने पर दुखी होते हैं और माशा के आज़ाद होने पर खुश होते हैं। वैसे अब रूही स्पेन के बारे में सोच रही है। न माशा न फेलुदा रूही ने तय किया कि विश्व पुस्तक दिवस के दिन वह स्पेन की कहानी की अपनी पसंदीदा

पात्र इल्फिया के बारे में बात करेगी। रूही को इल्फिया इसलिए पसंद थी क्योंकि वह एक मेहनती और नेक दिल लड़की थी। सभी की मदद करती थी और ख़ासकर बेज़ुबान दोस्तों की। इल्फिया का घर चोट लगे पशु-पक्षियों का दवाखाना था। वह उनकी देखभाल करती थी और वे स्वस्थ होने तक इल्फिया के घर में ही रहते थे। इल्फिया उनकी भाषा भी सीख गई थी। जब पशु-पक्षी ठीक हो जाते तो चले जाते लेकिन कभी सुंदर फूल तो कभी ताज़े फल और शहद इल्फिया को दे जाते थे। एक और ख़ास बात थी, इल्फिया बहुत स्वादिष्ट खाना भी बनाती थी। जब उसके गांव में तूफ़ान ने ज़बरदस्त तबाही मचाई थी तब इल्फिया के पक्षियों ने ही सबसे पहले इल्फिया को आकर ख़बर दी थी कि मौसम ख़राब हो रहा है और नदी का पानी ऊपर चढ़ रहा है। पूर्व सूचना मिलने से गांव के लोग सुरक्षित जगहों पर छिप गए और जान बचा पाए। लेकिन कई मकान ढह गए। खेत में सारी फसल तहस-नहस हो गई। खाना बर्बाद हो गया। अनाज -आटा सब डूब गया। लेकिन जमीन के नीचे दबी गाजर का तूफ़ान ने कुछ नहीं बिगाड़ा था और उस इलाक़े में काफ़ी गाजर होते थे। तब इल्फिया ने गाजर इकठ्ठा किया और पूरे गांव भर का पेट स्वादिष्ट गाजर के सूप से भरा था। स्पेन की यह कहानी रूही को बेहद पसंद थी और रूही ने फ़ैसला किया कि इल्फिया का परिचय वह अपनी कक्षा से करवाएगी। रूही ने मम्मी से कहा कि वह एक लंबी स्कर्ट और सफ़ेद शर्ट पहनकर जाना चाहती है, ठीक इल्फिया की तरह लेकिन उसे एक रंगीन स्कार्फ़ की ज़रूरत पड़ेगी। मम्मी ने वादा किया कि वह पुस्तक दिवस के पहले रूही के लिए एक रंगीन स्कार्फ़ ख़रीद कर ला देंगी। ❑

–टावर 11, फ्लैट 1703, सेक्टर-137, नोएडा, उ.प्र.-201301

बेटियां

–ऋषि मोहन श्रीवास्तव

बेटियों से घर की पहचान
इनका रखना सदा ध्यान।

गौरव घर का ये बढ़ाती
मेहनत से आगे बढ़ जाती,
हौसले सदा इनके बढ़ाएं
ये परिवार का नाम बढ़ाएं।।

बेटे-बेटियों में करना न अंतर,
भलें मुश्किलें आएं निरंतर
परवरिश इनकी तुम करना
मिटा देंगी ये विपदाएं तुम्हारी।

प्यार-स्नेह बांटतीं ये
हैं सारे जग की शान।
इनसे बढ़ता घर का मान
कुल की हैं पहचान।

हौसला बढ़ाएं इनका,
पढ़ाइए अपनी बेटियां।
रोकिए न आगे बढ़ने से
बेटों से बढ़कर बेटियां।

जो जुल्म इन पर ढाता
वह सिर्फ मुश्किलें पाता।
करना सदा इनका सम्मान
मिलेगा जग में मान।

दो कुलों को ये बनातीं
त्याग-तपस्या का है गहना।
गौरव की ये अधिकारी
अब तो सबका यह कहना।

–एस-1, नित्यानंद विला, कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाणीगंज, ग्वालियर म.प्र.-474001

अवसर एक पर्व अनेक

–शकुन्तला माथुर

दूसरी नवरात्रि मार्च-अप्रैल के महीने में होती है। यह हिंदी माह के अनुसार यह चैत्र महीने में अमावस्या के बाद प्रतिपदा के दिन से आरंभ होकर नवमी को समाप्त होती है। दुर्गा देवी की पूजा तो इसमें होती ही है, पर विशेष रूप से यह रामचंद्रजी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। रामचंद्रजी का जन्म चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की नवमी को हुआ था। इसीलिए इसे रामनवमी भी कहते हैं। प्रतिपदा के दिन से उत्सव आरंभ हो जाता है। इस दिन हिंदू विक्रमी सवंत् में नव वर्ष भी प्रारंभ होता है। जो धार्मिक कार्यों के लिए प्रयोग में आता है। इसे देश के विभिन्न भागों में कई नामों-गुड़ी पड़वा, चेदी-चंड, उगादी, आदि नामों से भी जाना जाता है। पूजा-पाठ, व्रत-उपवास सब आठ दिन तक चलता रहता है। नवमी को जन्मोत्सव मनाया जाता है। लोग विविध प्रकार के भोग प्रसाद चढ़ाते हैं। आरती उतारते हैं, भजन-कीर्तन करते हैं, नाचते-गाते हैं और बहुत उल्लास और उत्साह से पूजा-अर्चना आदि करके उत्सव को समाप्त करते हैं।

अमावस्या के बाद प्रतिपदा (पड़वा) को पहली नवरात्रि होती है। नवरात्रि करने वाले व्रत रखते हैं। सुबह नहा-धोकर कलश-गणेश की स्थापना करते हैं। कलश में प्राण प्रतिष्ठा करते हैं, उसमें सभी देवताओं का आह्वान करते हैं। फिर उसका शोडषोपचार से पूजन करते हैं। उसी प्रकार गणेशजी का पूजन भी विधि पूर्वक करते हैं। रामचंद्रजी की मूर्ति की स्थापना करके उसमें भी प्राण प्रतिष्ठा करते हैं और फिर शोडषोपचार से पूजा-अर्चना, भोग-प्रसाद तथा आरती आदि करते हैं। बहुत से लोग नौ दिन का रामायण पाठ और जाप आदि करते हैं और रात को तो नौ दिनों तक रोज भजन और कीर्तन का कार्यक्रम चलता ही रहता है। नवें दिन रामायण का पाठ समाप्त होता है। व्रत करने वाले दसवें दिन भोजन ग्रहण करते हैं। आश्विन की नवरात्रि की ही भांति कुछ लोग तो, नौ दिन तक, एक समय ही फल-दूध लेकर रहते हैं। कुछ लोग दोनों वक्त फलाहार कर लेते हैं और कुछ हैं, जो एक समय अन्नाहार लेते हैं। रात को कुछ फल खाकर दूध पी लेते हैं।

चैत्र की नवरात्रि में रामचंद्रजी की पूजा होती ही है, इसके अतिरिक्त दुर्गा देवीजी की पूजा भी होती है, आश्विन मास की नवरात्रि के अनुसार ही। इसके अतिरिक्त मिट्टी के छोटे से बर्तन में कंडे

की आग जलाई जाती है, घी और धूप-चंदन आदि डालकर प्रज्जवलित कर लेते हैं। यह ज्योति की भी पूजा है। जब तक ज्योति प्रज्जवलित नहीं होती तब तक पूजा आरंभ नहीं होती। उसे ही देवी का प्रतीक मानकर पूजा-अर्चना करते हैं, आरती उतारते हैं और भोग-प्रसाद चढ़ाते हैं। यह पूजा भी नौ दिन तक होती रहती है। शाम को सूर्यास्त के बाद देवी के गीत गाए जाते हैं। अष्टमी के दिन बड़ी पूजा होती है- हवन आदि करते हैं। और फिर आश्विन की नवरात्रि की भांति ही नवमी के दिन कन्या-बालकों को जिमाते हैं और फिर उन्हें टीका लगाकर पान-सुपारी और दक्षिणा देकर विदा करते हैं। दक्षिणा में उन्हें अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार लोग रुपये-पैसे या कुछ कपड़ा या बर्तन जैसे कटोरी, थाली या गिलास आदि भी देते हैं।

इस प्रकार नवरात्रि का पूजन होता है। यह नौ दिनों का त्योहार समाप्त होता है। चैत्र मास की नवरात्रि में रामचंद्रजी और देवी की भी पूजा होने के कारण पूजन में काफी समय लग जाता है। इस नवरात्रि पर जौ नहीं बोते हैं। ❑

–प्रकाशन विभाग से प्रकाशित पुस्तक 'हमारे त्योहार' से साभार

कीमत : 100, पृष्ठ : 132

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(जून, 2020)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुनः आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 30 अप्रैल, 2020 तक *'गर्मी भगाओ पेड़-पौधे लगाओ'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम .....

आयु .....

पता .....

.....

.....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

कैसे मुस्कुराए धरती

–नवनीत कुमार गुप्ता

यासिन और अमीना को जब भी अपने दादा-दादी के गांव जाने का मौका मिलता तो उनका रोजाना का नियम था कि सुबह-सुबह गांव के पास से बहने वाली नदी के किनारे जाते। वैसे उनके दादा जी अयूब का तो नियम था ही कि बारह महीनों सुबह टहलने के लिए नदी तक जाते थे। लेकिन बच्चों के साथ होने पर नदी किनारे काफी देर बैठे रहते और उन्हें अपने बचपन के किस्से सुनाते रहते। यासिन और अमीना रंग-बिरंगे पक्षियों को देखने और दादीजी से कहानियां सुनने में इतने तल्लीन हो जाते कि उन्हें पता ही नहीं चलता की कब दो-तीन घंटे बीत जाते।

लेकिन इस बार जब सदियों में यासिन और अमीना जब गांव आए तो उन्हें इस बात से निराशा हुई कि नदी किनारे पक्षी बहुत ही कम दिखाई दे रहे हैं। हालांकि इस मौसम में हर साल यहां दूर-दूर से पक्षी आते थे जिनकी सुंदरता अनोखी होती थी।

यह बात उन्होंने अपनी मौसी अफसाना को बताई जो डीडी साइंस नाम विज्ञान चैनल पर विज्ञान विशेषज्ञ के रूप में काम करती थी और इस समय किसी कार्यक्रम के सिलसिले में गांव आयी हुई थीं।

अमीना ने मौसी से पक्षियों के इस बार कम आने के बारे में पूछा ''हर बार जब हम गांव आते थे तो यहां बहुत सारे पक्षी होते थे लेकिन इस बार काफी कम पक्षी दिखाई दे रहे हैं।''

यासिन ने अमीना की बात को बीच में टोकते हुए कहा ''मौसी वैसे हर साल पक्षियों की संख्या कम होती जा रही है।''

अफसाना ने बच्चों को समझाते हुए कहा ''बच्चों, इसका

एक कारण जलवायु परिवर्तन है।''

जलवायु परिवर्तन! बच्चों ने आश्चर्य से अफसाना की ओर देखते हुए कहा।

अफसाना समझ गयी थी कि अब दोनों को सारी बात विस्तार से समझानी पड़ेगी। दोनों को समझाते हुए अफसाना ने कहा ''बच्चों, असल में आज हमें धरती पर अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनमें से अधिकतर का कारण कहीं न कहीं जलवायु परिवर्तन है। इसीलिए इस वर्ष विश्व पृथ्वी दिवस की विषयवस्तु यानी थीम भी जलवायु परिवर्तन से संबंधित है।''

यासिन ने उत्सुकता से पूछा ''मौसी, विश्व पृथ्वी दिवस कब मनाया जाता है।''

अफसाना ने बताया ''हर वर्ष 22 अप्रैल को पूरी दुनिया पृथ्वी दिवस मनाती है। 1970 में शुरू हुए इस सफ़र ने 2020 में अपने 50 साल पूरे कर लिए हैं। असल में ये पृथ्वी के प्रति संवेदनशीलता और जागरुकता के पचास साल हैं।''

यासिन ने मौसी की बात में हां में हां मिलाते हुए कहा ''आज का दौर ऐसा दौर है जब पृथ्वी दिवस की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, व्यापारिक स्वार्थ के लिए जंगलों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, खनन और जल का निरंतर दोहन हमारे लिए चिंता का विषय है।''

अयूब को भी पृथ्वी के बदलते वातावरण को लेकर बड़ी चिंता थी और वह इस विषय में काफी कुछ पढ़ा करते थे। तो उन्होंने भी बच्चों को समझाते हुए कहा ''विगत कुछ दशकों में दिशाहीन विकास के चलते मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है। जिसके परिणामस्वरूप आज हवा, पानी और मिट्टी अत्यधिक प्रदूषित हो गए हैं और प्रदूषण के कारण कहीं बीमारियां फैल रही हैं तो कहीं असमय बारिश से फसलों की पैदावार प्रभावित हो रही है। जीवों की अनेक प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं।''

अफसाना ने अपने पिता जी की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा ''कोयला, पेट्रोल, कैरोसिन जैसे जीवाश्म ईंधनों के दहन से वातावरण में ऐसी गैसों की मात्रा बढ़ रही है जिससे पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा है यानी ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग आज पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है। सबसे अजीब बात यह है कि जो विकसित देश इस समस्या के लिए अधिक जिम्मेदार हैं वे विकासशील व अन्य देशों पर इस बात के लिए दबाव बना रहे हैं कि वे ऐसा विकास न करें जिससे धरती का तापमान बढ़े।

यासिन ने अपनी मौसी की बात को समझते हुए कहा, ''पृथ्वी को जीवनमयी बनाए रखने के लिए हम सभी को एक होना होगा। सभी के सामूहिक प्रयासों के द्वारा

ही हम धारणीय विकास करते हुए पृथ्वी को बचा सकते हैं।''

आमीन को भी यासिन की बात अच्छी लगी और उसने कहा ''हम सभी को अपने-अपने स्तर पर ऐसे कार्य करने होंगे ताकि प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जा सके। ऊर्जा के नवीकरणीय संसाधनों जैसे पवन ऊर्जा एवं सौर ऊर्जा का उपयोग करना होगा। साथ ही पानी और ऊर्जा की बर्बादी को रोक कर ऐसे अन्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना होगा क्योंकि इन्हीं संसाधनों पर हमारा और हमारी भावी पीढ़ियों का भविष्य टिका है।''

अफसाना ने कहा ''इस दिशा में विश्व पृथ्वी दिवस एक अच्छा अवसर है जो हमें पृथ्वी को जीवनदायी बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वैसे पहली बार पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, 1970 को मनाया गया था। लेकिन आज भी हमें पृथ्वी को बचाने के लिए उसी ताकत और हिम्मत से ऐसे काम करने होंगे जिससे हमारी धरती का भला हो।''

अयूब ने भी अफसाना की बात को स्वीकृति देते हुए कहा ''पृथ्वी दिवस के अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति को प्राकृतिक संसाधनों का समझदारी से उपयोग करना सीखना होगा तभी यह धरती भविष्य में मानव की आवश्यकताओं को पूरा करती हुई जीवन के रूपों को संवारती रहे। हमें पृथ्वी पर मंडरा रहे खतरों को समझने की जरूरत है। पृथ्वी को इन खतरों से बचाने की सर्वाधिक जिम्मेदारी मानव के कंधों पर ही है। इसलिए हमें अपनी भूमिका समझ कर पृथ्वी को जीवनमय बनाए रखने की दिशा में कदम उठाने होंगे।''

अफसाना ने बच्चों को यह भी समझाया ''आज हम देखते हैं कि मानवीय लालच का परिणाम जलवायु परिवर्तन के रूप में सामने आया है। इस समय पूरी दुनिया में मानव के द्वारा प्रकृति के अंधाधुंध दोहन की बढ़ती प्रवृत्ति चिंता का विषय है। ज्यों-ज्यों मानव ने सभ्यता की सीढ़ियां चढ़ी हैं, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएं बढ़ीं हैं। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की खातिर मानव ने जरूरत से ज्यादा प्राकृतिक संपदा का दोहन करके इस ग्रह के नाजुक संतुलन को ही गड़बड़ा दिया है।''

अयूब ने कहा ''लेकिन यह बात सोचने की है कि बेलगाम दोहन के बावजूद आदमी पहले से ज्यादा सुखी नहीं हुआ है, ज्यादा दुखी हो गया है। गांधीजी कहा करते थे कि भोग की बढ़ती प्रवृत्ति ही प्रकृति का दोहन करवाती है इसलिए हमें इससे बचना चाहिए और जल, जमीन और भोजन

जैसी अनिवार्य सुविधाओं के लिए हमें प्रकृति का दोहन नहीं बल्कि उसका उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने पर ही यह धरती युगों-युगों तक हमारी आवश्यकताओं को पूरा करती हुई जीवन के विविध रूपों के साथ मुस्कुराती रहेगी।''

अफसाना ने बच्चों को यह भी समझाया कि यदि पृथ्वी ग्रह का वातावरण सही रहेगा तो यहां पर जीवों की विविध प्रजातियां सदैव कायम रहेंगी।

अमीना ने उत्सुकता से पूछा ''मौसी, तो क्या यदि हमारी पृथ्वी और अधिक हरी-भरी हो जाएगी और जलवायु परिवर्तन का संकट टल जाए तो क्या हमारे गांव की नदी के किनारे फिर से बहुत सारे पक्षी आएंगे।''

अफसाना ने हां की मुद्रा में सिर हिलाते हुए कहा ''उसके लिए हमें छोटी-छोटी चीज़ें करनी हैं जैसे पानी बर्बाद नहीं करें, कूड़ा कूड़ेदान में डालें, आस-पास सफाई रखें, पौधे लगाएं, प्लास्टिक का इस्तेमाल मत करो। ऐसे छोटे कामों से हम भी पृथ्वी का भला कर सकते हैं।'' ❑

–विज्ञान प्रसार, 5वां तल, पृथ्वी भवन, रोधी रोड, नई दिल्ली-110045

खेलो इंडिया

–सोनी कुमारी

खिलाड़ी अपना ध्यान केवल श्रेष्ठ प्रदर्शन पर लगाएं, बाकी की चिंता देश कर रहा है। कोशिश है कि पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी बढ़े। खेलो इंडिया भारतीय खेलों के इतिहास के लिए ही नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण है। गरीब परिवारों, छोटे शहरों के खिलाड़ी इन खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

–प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के उद्घाटन समारोह के दौरान

कभी नारा हुआ करता था, 'पढ़ेगा इंडिया, बढ़ेगा इंडिया'। मौजूदा केंद्र सरकार ने इस नारे में और विस्तार करते हुए इसे 'खेलेगा भारत तो खिलेगा भारत' किया। मतलब, आज से 15-20 साल पहले तक जहां बच्चों के लिए पढ़ाई ही सबकुछ होती थी, वहीं अब खेल को भी उतना ही महत्व दिया जाने लगा है। ऐसा इसलिए कि अब खेल में भी बच्चों को अपना भविष्य दिखने लगा है। बच्चे पढ़ाई और खेल एक साथ जारी रख सकें, इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने 2018 में खेलो इंडिया स्कूल गेम्स की शुरुआत की जिसे अब खेलो इंडिया यूथ गेम्स नाम दे दिया गया है। हर साल आयोजित होने वाले इस गेम्स में एक और कड़ी जोड़ते हुए सरकार ने इस साल से खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स की भी शुरुआत कर दी है। पहली बार आयोजित यूनिवर्सिटी गेम्स में 177 यूनिवर्सिटी के करीब 3,340 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। देश के यूनिवर्सिटी के बीच होने वाला यह खेल आयोजन भी हर साल होगा।

खेलो इंडिया की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसने खेल-कूद के मामलों में शहर और गांव का भेद खत्म कर दिया है। वर्ष 2018 में खेलो इंडिया के अस्तित्व में आने से पहले तक देश में कई तरह की खेल योजनाएं चल रही थीं। इनमें से अधिकांश के बारे में लोगों को पता भी नहीं था। जिसका पता भी था तो वहां संसाधनों का घोर अभाव था। बच्चों को उससे कुछ खास फायदा नहीं था। हालांकि इनमें से अधिकांश योजनाएं शहरों के लिए ही थी। खेलो इंडिया के आगमन से पहली बार ऐसा हुआ है कि शहर और गांव का भेद खत्म हुआ और अब गांव-देहात के बच्चों

को भी अपना हुनर दिखाने का मौका मिलने लगा है। सरकार का उद्देश्य भी यही है कि अब कोई भी प्रतिभा छिपी नहीं रहे और सभी को एक समान मौका मिले।

क्या है फायदा

खेलो इंडिया के चलन में आने के साथ ही सरकार ने स्कूलों में अब खेल को भी अनिवार्य कर दिया है। मतलब स्कूल में अब कम-से-कम एक पीरियड खेल का भी होने लगा है। इससे बच्चों में खेल के प्रति जबर्दस्त दिलचस्पी जाग रही है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि पहले बच्चों की खेल में भविष्य नहीं दिखता था। लेकिन, खेलो इंडिया से हर साल सरकार 1,000 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का चयन करती है। इन्हें आठ वर्षों तक सरकार की तरफ से पांच लाख रुपये ट्रेनिंग के लिए सालाना मिलते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि बच्चे आर्थिक तंगी के कारण बीच में खेल छोड़ने के लिए मजबूर नहीं होंगे। सरकार की एक योजना यह भी है कि अच्छा करने वाले बच्चों को स्पोर्ट्स कोटे से सरकारी नौकरी दी जाएगी। यह तो व्यक्तिगत फायदा हुआ, देशहित में अगर बात करें तो इससे ओलंपिक, एशियन गेम्स और कॉमनवेल्थ गेम्स जैसे बड़े खेल आयोजनों में मेडल की संख्या में इजाफा होगा।

खेलो इंडिया में शामिल खेल

16 खेलों को पहले इसमें शामिल किया गया था जो कि अब बढ़कर 18 हो गए हैं। ये हैं- तीरंदाजी, तलवारबाजी, बैडमिंटन, ऐथलेटिक्स, बास्केटबॉल, मुक्केबाजी, हॉकी, फुटबॉल, जिम्नास्टिक्स, जूडो, कबड्डी, खो-खो, शूटिंग, तैराकी, वॉलीबॉल, कुश्ती, टेनिस और भारोत्तोलन शामिल हैं।

क्या हैं योग्यता

- खिलाड़ी को भारत का निवासी होना चाहिए
- खिलाड़ी की उम्र 8 से 17 वर्ष के बीच होनी चाहिए;
- इस साल से अंडर-21 खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स की शुरुआत हुई है जिसमें कॉलेज और यूनिवर्सिटी के छात्र हिस्सा ले सकेंगे;
- एक खिलाड़ी केवल एक ही योजना के लिए आवेदन के योग्य होगा;

क्या हैं मुख्य उद्देश्य

- मैदानी खेल को बढ़ावा देना
- खिलाड़ियों का व्यक्तिगत विकास, आर्थिक विकास, सामुदायिक विकास इत्यादि करना
- बच्चों को पढ़ाई के साथ ही खेल के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना

ओलंपिक के व्यक्तिगत स्पर्धा में दो मेडल जीतने वाले एकमात्र खिलाड़ी पहलवान सुशील कुमार ने खेलो इंडिया को देश के *खेल इतिहास में क्रांतिकारी बदलाव* करार दिया है। हमने सुशील कुमार से बात की। उन्होंने कहा- ''खेल में सुपर पावर बनेगा भारत''। सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा ''जब हम खेलते थे तब इतनी सुविधाएं नहीं होती थीं। कई बच्चे प्रतिभाशाली होने के बावजूद सुविधा और समर्थन के अभाव में बीच में ही खेल छोड़ देते थे। लेकिन खेलो इंडिया के चलन में आने से अब बच्चों को खेल में भी अपना भविष्य दिखने लगा है। बच्चे अब पहले से ज्यादा खेल में दिलचस्पी लेने लगे हैं। ट्रेनिंग की क्वॉलिटी भी पहले से बढ़िया हो गई है। इससे देश को खेल में सुपर पावर बनने में मदद मिलेगी। इसके अच्छे परिणाम हमें अगले कुछ वर्षों में देखने को मिलने लगेंगे।'' ❑

–म.नं.-12/597, तीसरा तल, वेस्ट गुरु अंगद नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

राष्ट्रीय समर स्मारक

–कल्पना श्रीवास्तव

गुरमीत को राजधानी दिल्ली बहुत पसंद है। फगवाड़ा में रहता है ना, तो तायाजी के पास हर साल इम्तहान के बाद जरूर आता है। परमीत तायाजी और पम्मी ताईजी दिल्ली में रहते हैं। वह तायाजी और ताईजी का लाडला है। इस बार दिल्ली आया है तो घूमने-फिरने की योजना बनाई जा रही है। ''ताया जी, कल हम कहां घूमने चलेंगे?'' गुरमीत ने पूछा।

''पुत्तर जी, कल हम राष्ट्रीय समर स्मारक देखने जाएंगे।'' तायाजी ने कहा।

''वह क्या है तायाजी? मैंने तो इसका नाम नहीं सुना?'' गुरमीत ने हैरानी से पूछा।

''यह इंडिया गेट के पास बना है। अभी एक साल पहले ही देश को समर्पित किया गया है।'' ताईजी ने जवाब दिया।

''राष्ट्रीय समर स्मारक, क्या सैनिकों की याद में बनाया गया है? नाम से तो ऐसा ही लगता है ताईजी।'' गुरमीत को कुछ-कुछ समझ आ रहा था।

''वाह मेरा पुत्तर! तू तो बहुत समझदार है। चलो मैं इसके बारे में आपको बताता हूं।'' तायाजी ने कहा।

''इंडिया गेट के बारे में तो आप जानते ही हो। यह आज़ादी से पहले 1931 में बनाया गया था। प्रथम विश्वयुद्ध और तीसरे एंग्लो अफगान युद्ध में शहीद हुए भारतीयों की याद में इसका निर्माण हुआ था। उनमें से 13,516 लोगों के नाम इंडिया गेट पर खुदे हुए हैं। इसके बाद 1971 में भारत पाक युद्ध में शहीद हुए लोगों की याद में अमर जवान ज्योति बनाई गई। इंडिया गेट की मेहराब के नीचे अमर जवान ज्योति के साथ उल्टी राइफल पर हेमलेट स्थापित किया गया। उस पर सभी देशी-विदेशी गणमान्य व्यक्ति पुष्पांजलि देते हैं।''

''फिर यह महसूस किया गया कि आजादी के बाद के युद्धों में शहीद होने वाले भारतीय सैनिकों की याद में भी एक स्मारक होना चाहिए। आप तो जानते हैं कि हमारे सैनिकों को आतंकवादी विरोधी अभियानों में भी हिस्सा लेना होता है। अपने कर्तव्य पालन में वे कई बार शहीद हो जाते हैं। क्या आप जानते हैं कि आजादी के बाद से भारतीय सेनाओं के 26 हजार

से ज्यादा सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। उनके बलिदानों को समर्पित राष्ट्रीय स्तर पर कोई स्मारक नहीं है। वैसे इस पर 1961 से ही विचार किया जा रहा था। 2015 में हमारी सरकार ने इसके निर्माण को मंजूरी दी।'' तायाजी ने कहा।

''तायाजी, इसे किसने डिजाइन किया। कैसे बना यह स्मारक?'' गुरमीत का कौतुहल बढ़ता जा रहा था।

इसका जवाब ताईजी ने दिया, ''पता है, इसके लिए 2016-17 में एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। वीबी डिजाइन लैब चेन्नई के योगेश चंद्रहासन इसके विजेता बने और उन्हें प्रॉजेक्ट सलाहकार नियुक्त किया गया। उन्होंने ही इसका डिजाइन बनाया। इसे नई दिल्ली के सी हेक्सागन पर इंडिया गेट के पूर्व में स्थित छतरी के आस-पास के 40 एकड़ क्षेत्र में बनाया गया। 25 फरवरी, 2019 को प्रधानमंत्री ने इसे राष्ट्र की ओर से सशस्त्र सेनाओं को समर्पित किया।''

''स्मारक में चार सर्किल्स यानी वृत्त हैं। इनके नाम हैं, रक्षक चक्र, त्याग चक्र, वीरता चक्र और अमर चक्र। अमर चक्र में अमर ज्योति के साथ एक स्मारक स्तंभ है। यह ज्योति शहीदों की अमरता की प्रतीक है। उन्हें यह संदेश देती है कि उनके बलिदान को देश कभी नहीं भूलेगा। वीरता चक्र, उसके बाहर का घेरा है। इसमें भारतीय सैनिकों द्वारा लड़ी गई छह वीरतापूर्ण लड़ाइयों को कांसे के भित्ति चित्रों से दर्शाया गया है। इसके बाद त्याग चक्र आता है। यह चक्र, प्राचीन काल की व्यूह रचना, चक्रव्यूह का प्रतीक है। आपको याद होगा कि कैसे महाभारत की कथा में कौरवों ने युद्ध के दौरान चक्रव्यूह की रचना की थी, जिसमें अभिमन्यु फंस गया था।'' तायाजी बोले।

गुरमीत को याद आ गया, ''जी तायाजी, याद आ गया। अच्छा, यह चक्र कैसा है?''

''इसमें ग्रेनाइट की पट्टियां लगी हैं और हर शहीद सैनिक को एक ग्रेनाइट की पट्टी समर्पित है। उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है पट्टियों में।'' तायाजी ने कहा।

''वाह, तायाजी। कितना सुंदर लगता होगा यह।'' गुरमीत की आंखें खुशी से नाच रही थीं।

''अब आपको मैं सबसे बाहरी वृत्त- रक्षक चक्र के बारे में बताता हूं। दरअसल घने वृक्षों की पंक्ति ही रक्षक चक्र का निर्माण करेगी। फिलहाल यहां पौधे लगाए गए हैं जो आने वाले समय में वृक्ष बन जाएंगे। प्रत्येक वृक्ष सैनिकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अलावा इस स्मारक स्थल में एक परम योद्धा स्थल भी है। यहां परम वीर चक्र से सम्मानित 21 योद्धाओं की मूर्तियां स्थापित हैं।'' तायाजी बता रहे थे।

गुरमीत और भी कुछ बातें जानना चाहता था। उसने पूछा, ''तायाजी, वहां और भी कुछ है इन सबके अलावा?''

''हां। यहां एक स्मारिका बिक्री केंद्र है, जहां से आप यादगार वस्तुएं खरीद सकते हो। यहां एक गैलरी भी है। एक प्रतीक्षा कक्ष है। बेंच लगे हैं, जहां आप थककर विश्राम कर सकते हो। यह सबकी सुविधाओं का ख्याल रखा जाता है। यह दिव्यांग जन के अनुकूल है। उनके लिए पार्किंग की व्यवस्था है। जिन्हें चलने-फिरने में तकलीफ है, उनके लिए व्हील चेयर की सुविधा भी है। पेयजल की सुविधा और जन सुविधा केंद्र भी है। त्यागचक्र में ग्रेनाइट पट्टिका को ढूंढने के लिए मोबाइल एप्लिकेशन है। इसे गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है।'' तायाजी ने बताया।

''तो तायाजी, यहां जाने के लिए टिकट भी लगता है?'' गुरमीत ने पूछा।

''नहीं पुत्तर जी। यह निशुल्क है। हर दिन खुल रहता है। नवंबर से मार्च तक सुबह नौ बजे से

शाम साढ़े सात बजे तक। अंतिम प्रवेश का समय सात बजे है। फिर अप्रैल से अक्टूबर के बीच यह सुबह नौ बजे से शाम को साढ़े आठ बजे तक खुला रहता है। इस समय अंतिम प्रवेश शाम आठ बजे तक होता है।'' ताई जी ने जवाब दिया।

तायाजी बोले, ''वैसे यहां सारे साल कोई न कोई गतिविधि होती है। राष्ट्रीय महत्व के दिनों को मनाने के लिए पुष्पांजलि दी जाती है। विदेशी मेहमान भी यहां पुष्पांजलि देते हैं। हर रोज सूर्यास्त से पहले रिट्रीट होती है। यह पारंपरिक रूप से उस दिन के युद्ध के समाप्त होने का प्रतीक है। 32 सेकेंड की बिगुल ध्वनि साथ ध्वज फहराया जाता है। उस दौरान सभी शांतिपूर्ण सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं। रोजाना रिट्रीट से ठीक पहले एक शहीद के परिजनों द्वारा पुष्पांजलि दी जाती है। हर रविवार को सूर्यास्त से 45 मिनट पहले गार्ड की बदली होती है।''

ताईजी ने बताया, ''कुछ और तथ्य हैं, जिनका इस राष्ट्रीय स्मारक स्थल में ध्यान रखा जाता है। सिर्फ तय रास्ते पर चलना होता है। मोबाइल फोन को साइलेंट पर रखना होता है। यहां शोर नहीं मचाना चाहिए। ऊंची आवाज में बात भी नहीं करनी चाहिए। किसी चीज को हाथ नहीं लगाना चाहिए। यहां वीडियो कैमरा लगा हुआ है।''

गुरमीत सुनकर खुश हो गया। उसने पूछा, ''कल चलेंगे ना तायाजी हम लोग? अच्छा कैसे चलेंगे?''

''हम नोएडा में रहते हैं ना, तो हम मेट्रो की ब्ल्यू लाइन लेंगे। अगर मंडी हाउस पर उतरे तो वहां से 1.5 किलोमीटर दूर है यह

स्थल, अगर प्रगति मैदान उतरे तो वहां से 2.5 किलोमीटर। वहां से हम ऑटो ले लेंगे। अच्छा पम्मी, एक काम कर। रोशन भाईजी, परजाई और अपने प्राह बलविंदर को भी बुला ले।'' तायाजी ने कहा।

''हां, रोशन भाईजी तो येलो लाइन लेंगे और उद्योग भवन या केंद्रीय सचिवालय उतर जाएंगे। राष्ट्रीय समर स्मारक उद्योग भवन से 2.5 किलोमीटर है और केंद्रीय सचिवालय से भी 2.5 किलोमीटर। बलविंदर वायलेट लाइन लेगा तो खान मार्केट या जनपथ उतर सकता है। इन दोनों स्टेशनों से स्मारक स्थल 2 किलोमीटर है। ये लोग बस से आएंगे तो बड़ौदा हाउस उतर सकते हैं, स्मारक स्थल वहां से 800 मीटर की दूरी पर स्थित है। बलविंदर को याद दिला दूंगी कि अपना प्रोफेशनल कैमरा लेकर मत आना। ऐसा करना मना है।'' ताईजी ने कहा। ''अच्छा चलो सो जाओ आप... कल सुबह जल्दी घर से निकलना है।''

''हां-हां बिल्कुल।'' गुरमीत जल्दी से बिस्तर पर लेट गया। कल के दिन के लिए वह बहुत उत्साहित था ❑

–ए-29, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा इन्क्लेव, नई दिल्ली-110096

स्वतंत्रता, समता और नागरिकों की गरिमा

–सुभाष कश्यप

बच्चो! संविधान के बारे में जानकारी देने के लिए हमारा संविधान कॉलम शुरू किया जा रहा है। इस कॉलम से संबंधित कुछ प्रश्न बच्चों से पूछे जाएंगे। सही उत्तर देने वाले प्रथम पांच विजेता बच्चों के फोटो, नाम, पता तथा मोबाइल नंबर जुलाई अंक में प्रकाशित किए जाएंगे। इसलिए प्रश्नों के उत्तर के साथ अपनी फोटो, कक्षा, घर का पता, फोन नंबर अवश्य भेजें।

संविधान की उद्देशिका में हम भारत के नागरिकों ने, और बातों के साथ, अपने सभी नागरिकों के लिए स्वतंत्रता और समता प्राप्त करने का संकल्प किया है और यह भी संकेत है कि इस सारे प्रयास में 'व्यक्ति की गरिमा' प्राप्त करना भी शामिल है।

स्वतंत्रता

'लिबर्टी' लैटिन शब्द लिबर से निकला है। इसका शाब्दिक अर्थ है- कद, कारावास, दासता या तानाशाही से आजादी। उदार पश्चिमी परंपरा और अहस्तक्षेप नीति के संदर्भ में जन्मी स्वतंत्रता (लिबर्टी) अधिकतर एक नकारात्मक अवधारणा थी। इसका मतलब था व्यापार में समान अवसर, अनुबंध और प्रतिस्पर्द्धा की स्वतंत्रता। स्वतंत्रता की परिकल्पना व्यक्ति के काम करने की आज़ादी में सरकार द्वारा हस्तक्षेप के अभाव के रूप में की गई। लेकिन हमारे संविधान की उद्देशिका में 'स्वतंत्रता का मतलब सिर्फ नियंत्रण या प्रभुत्व का अभाव नहीं है, यह 'विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता' के अधिकार की एक सकारात्मक अवधारणा है। इसमें विभिन्न स्वतंत्रताएं शामिल हैं जिन्हें बाद में मूल-अधिकारों के साथ में ठोस रूप दिया गया और जिन्हें व्यक्तिगत रूप से नागरिकों और सामूहिक रूप से राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य समझा गया। यह याद रखना चाहिए कि हमारे संविधान निर्माताओं का उद्देश्य कुछेक नागरिकों को कुछ निश्चित स्वतंत्रताओं की गारंटी देना नहीं था। सार्थक होने के लिए स्वतंत्रता सबके लिए, पूरे समाज के लिए होना आवश्यक था। जैसे कि न्यायमूर्ति के.एस. हेगड़े ने कहा है:

''आधुनिक संसार में स्वतंत्रता, जैसा सामान्य रूप से समझा जाता है, कोई एक साधारण अवधारणा नहीं है। इसके चार तत्व हैं। राष्ट्रीय, वैयक्तिक, राजनीतिक और आर्थिक। हमें इतिहास की अनेक घटनाओं मूल-तत्व और वर्तमान समय की उलझनों का सुराग तब मिलता है, जब हम यह समझ लेते हैं कि आज के विवाद और झगड़े सत्ता और स्वतंत्रता के बीच नहीं बल्कि स्वतंत्रता के एक रूप और दूसरे रूप के बीच हैं।

इसी वजह से सरकार-कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के प्रत्येक विभाग में रोक और प्रतिरोध होना आवश्यक है।''

''हमारे संविधान में मूल-अधिकारों के रूप में ऐसी रोक है और हमने निदेशक सिद्धांतों के रूप में विधायी और राज्य के कार्यों के लिए मार्गदर्शिका निर्धारित कर दी है। यह तो स्पष्ट है कि मूल-अधिकारों में किसी तरह का अतर्कसंगत हस्तक्षेप रद्द माना जाएगा। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि राज्य का कोई कार्य या कानून जो निदेशक सिद्धांतों के विरुद्ध है वह भी निष्प्रभावी होना चाहिए। लेकिन असली कठिनाई तब आती है जब टकराव इन दोनों के बीच मालूम होता है।''

कुछ प्राथमिक अधिकार हैं; जैसे- जीने का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, भाषण की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता आदि को सभी स्थितियों में अलंघनीय माना जाना चाहिए। (ए.के. गोपालन मामला, एआईआर 1950 एससी 27)।

''ये मूल-अधिकार उन बुनियादी मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका इस देश के लोग वैदिक काल से ही आदर करते आए हैं और इन्हें ऐसी स्थितियों बनाने के विचार से रखा गया है, जिनमें हर मनुष्य अपने व्यक्तित्व का पूरी तरह विकास कर सके। ये मानव अधिकारों के बुनियादी ढांचे की गारंटी के उदाहरण हैं और राज्य पर यह नकारात्मक दायित्व रखते हैं कि वह व्यक्ति की आज़ादी के विभिन्न पहलुओं का अतिक्रमण न करें।'' (मेनका गांधी बनाम भारत संघ, एआईआर, 1978, एससी 597 पृष्ठ 619)।

इन अधिकारों का उल्लेख नागरिकों के प्रति राज्य के आदेशात्मक कर्तव्यों के रूप में किया गया है लेकिन इसमें निश्चित रूप से यह भी निहित है कि नागरिक को हर दूसरे नागरिक के अधिकारों की जानकारी रखनी और उनका सम्मान करना होगा। इसके साथ यह भी है कि हर अधिकार के अनुरूप कर्तव्य का होना, एक का जो अधिकार है वहीं दूसरे के लिए कर्तव्य है। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'स्वतंत्रता, समता और नागरिकों की गरिमा' से साभार

पृष्ठ : 210

प्रश्नावली-4

- संविधान की उद्देशिका में स्वतंत्रता की क्या अवधारणा है?
- हमारे देश में स्वतंत्रता को किसके साथ ठोस रूप दिया गया।
- स्वतंत्रता किसके लिए आवश्यक है।
- आधुनिक युग में स्वतंत्रता के कितने तत्व हैं।
- जो एक का अधिकार है वही दूसरे के लिए क्या है?

प्रश्नावली-2 के उत्तर

प्रश्न 1. डॉ. आम्बेडकर संविधान का मूल-संप्रभुता किसे मानते थे?

उत्तर-डॉ. आम्बेडकर संविधान का मूल-संप्रभुता जनता को मानते थे।

प्रश्न 2. सरदार पटेल ने नए संविधान के विषय में क्या कहा था?

उत्तर-सरदार पटेल ने नए संविधान के विषय में कहा था कि भारत सरकार अधिनियम 1985 के विपरीत नया संविधान लोकतंत्रों और राजवंशों के बीच गठबंधन नहीं है बल्कि वह लोगों की संप्रभुता की आधारभूत धारणा पर निर्मित भारत के लोगों का एक वास्तविक संघ है?

प्रश्न 3. भारत की संप्रभुता किसमें निहित है?

उत्तर-भारत की संप्रभुता भारत के नागरिकों में निहित है।

प्रश्न 4. संप्रभुता की प्राथमिक और अंतिम जिम्मेदारी किस की होती है?

उत्तर-संप्रभुता की प्राथमिक और अंतिम जिम्मेदारी नागरिकों की होती है।

विजेता बच्चे

विशाल जायसवाल
के. आसिफ मार्डन प. स्कूल, सीतापुर, उ.प्र.

उपासना
सी-2 ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली

खुशी
वसंत विहार, दिल्ली

शांभवी
इंदिरापुरम, गाजियाबाद, उ.प्र.

यश शर्मा
नवीन शाहदरा, दिल्ली

अप्रैल लिली

–नरेन्द्र देवांगन

रामा काका बाग के माली थे। वह बाग के सारे पेड़-पौधों की अच्छी तरह देखभाल करते थे। इसीलिए सभी पेड़-पौधे उनसे बहुत खुश रहते हैं। रामा काका सभी पेड़-पौधों की देखभाल एक जैसी करते थे। लेकिन सारे पौधे आपस में एक-दूसरे की तुलना करते थे कि रामा काका किसको अधिक पसंद करते हैं और उसी की अच्छी तरह देखभाल करते हैं।

एक दिन सभी पौधों के सामने गुलाब का पौधा डींग हांकने लगा, ''रामा काका सबसे ज्यादा मुझे पसंद करते हैं। वे मेरा बहुत ध्यान रखते हैं।''

वहीं मौजूद बरगद का पेड़ हंसने लगा और बोला, ''रामा काका हम सबसे बहुत प्यार करते हैं। वे भेदभाव नहीं करते और हम सभी को एक परिवार का सदस्य मानते हैं।''

सर्दी के मौसम ने दस्तक दी थी। हर साल की तरह इस साल भी सर्दियों की शुरुआत में अन्य मौसमी फूलों के साथ लिली को भी बगीचे में लाया गया। लिली की अपनी एक अलग खूबसूरती थी। इसके लंबे-लंबे घुमावदार पत्ते थे और सभी मौसम में नारंगी व गुलाबी रंग के फूलों के लिए जानी जाती थी।

उस दिन रामा काका बाग में सभी मौसमी फूलों को रोप रहे थे। काम खत्म करते-करते शाम हो गई थी, इसलिए उन्होंने तय किया कि आज के लिए इतना काफी है। लिली और अन्य झाड़ियों को लगाने का काम दूसरे दिन के लिए टाल दिए।

रामा काका जब घर जाने के लिए दो-चार कदम आगे बढ़े, तभी उन्हें लगा कि लिली उनको पुकार रही है। उन्होंने पलटकर लिली की ओर देखा।

लिली ने पूछा, ''काका, आप मुझे आज क्यों नहीं लगा रहे हो? मुझे भी भोजन और पानी की जरूरत है। मुझे डर लग रहा है। मैं पूरी रात सो नहीं पाऊंगी। नर्सरी में मेरी मां ने मुझे ठीक से खाने-पीने और रात में अच्छी तरह सोने की बातें सिखाई हैं।''

रामा काका लिली को आज ही लगाना चाहते थे, लेकिन काफी अंधेरा हो गया था। उन्होंने लिली को अपनी मजबूरी बताते हुए बड़े प्यार से समझाया, ''लिली बेटा, मैं कल सुबह जल्दी आ जाऊंगा और तुम्हें

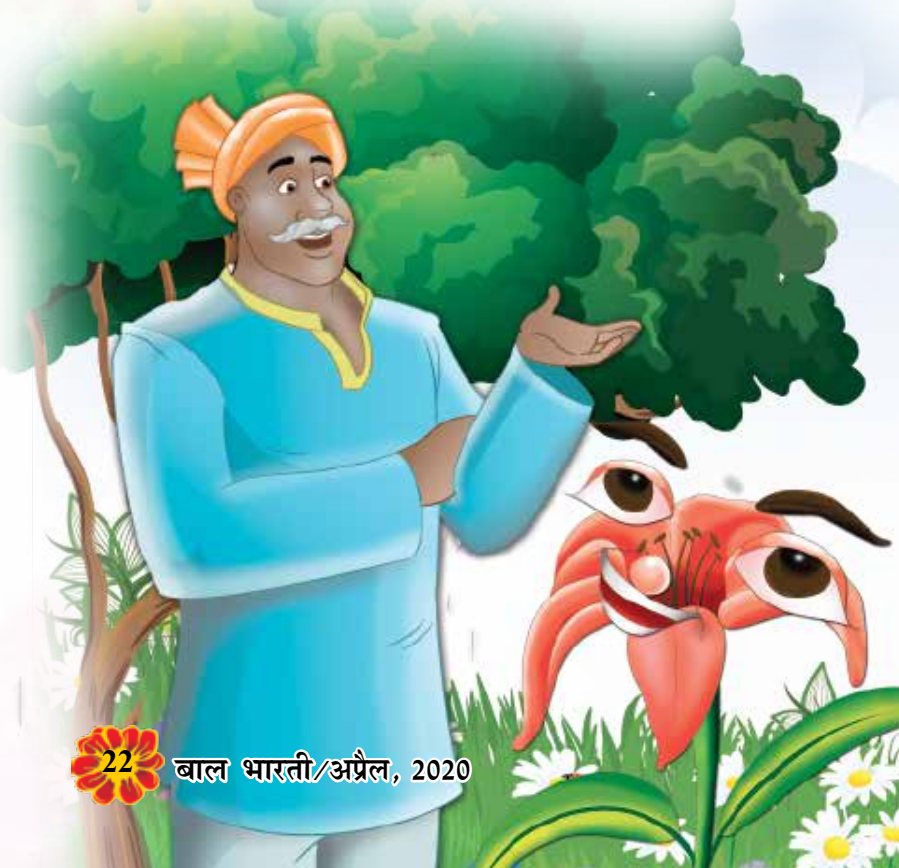

ऐसी जगह पर लगा दूंगा जहां तुम्हें अच्छा खाना व पानी मिलेगा। साथ ही तुम्हें अपने खूबसूरत फूलों को पैदा करने के लिए सूरज की रोशनी भी मिलेगी। तुम चिंतित न हो।''

इसके बाद रामा काका लिली को बाग के एक कोने में सुरक्षित रखकर घर चले गए। नई जगह पर रात में लिली घबराई हुई थी। किससे बात करती, वह अकेली थी। अंधेरे की वजह से लिली डरकर रोने लगी।

पास ही तुलसी के पौधे ने जब उसके सिसकने की आवाज सुनी, तब उसने प्यार से पूछा, 'क्या हुआ लिली?'

लिली ने कुछ नहीं कहा। अब वह धीरे-धीरे सिसकने लगी ताकि कोई सुन न सके।

उस रात लिली अच्छी तरह से सो नहीं पाई और आखिर में वह सुबह झपकियां लेने लगी। वह काफी देर से जगी। जब वह जगी तब तक सारे पौधे और झाड़ियां भोजन बनाने में व्यस्त थे।

उत्साहित लिली रामा काका का इंतजार कर रही थी। वह यह सोचकर खुश हो रही थी कि आज रामा काका उसे अच्छी जगह पर रोपेंगे। बहुत देर तक जब रामा काका नहीं आए, तब लिली ने तुलसी से पूछा, 'रामा काका कब आएंगे?'

तुलसी ने बताया, 'रामा काका के घर से खबर आई है कि वे बीमार हैं। आज बाग नहीं आएंगे।'

यह सुनकर लिली सोच में पड़ गई। रामा काका जब तक नहीं आएंगे उसे इसी हालत में पड़ा रहना पड़ेगा, सोचकर वह घबरा गई।

अगले कुछ दिनों तक रामा काका के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। वे बाग नहीं आए। उन्होंने बाग का काम करने के लिए अपने लड़के लाला को भेजा। लाला बाग में सिर्फ समय व्यतीत करता था। वह कोई काम नहीं करता था।

लाला के कामचोरी की बात रामा काका तक पहुंची। उन्होंने लाला को फटकारा तब वह बाग में कुछ काम करने लगा। उसने लिली को बेमन से एक कोने में लगा दिया। लिली को बहुत बुरा लग रहा था। उसने तय किया कि अब वह रामा काका के बाग को कोई फूल नहीं देगी।

अब रामा काका स्वस्थ हो गए। वह फिर से बाग में आने लगे। वे सभी पेड़-पौधे और झाड़ियों को देख रहे थे और खुश थे कि सभी स्वस्थ हैं। लेकिन लिली को उदास देखकर वह भी उदास हो गए। लिली काफी पतली व लंबी हो गई थी, लेकिन कोई फूल नहीं दे रही थी।

रामा काका ने प्यार से पूछा, ''लिली, तुम उदास क्यों हो?''

लिली अब बड़ी हो गई थी। वह बोली, ''कुछ नहीं काका, बस ऐसे ही।''

यह सुनकर रामा काका ने कहा, ''लिली, जब तुम बाग को अच्छे-अच्छे खूबसूरत फूल दोगी, उस दिन मुझे बहुत खुशी होगी।''

लिली दुखी स्वर में बोली, ''माफ करना काका, मैं आपको कोई फूल नहीं दूंगी, क्योंकि आपके बाग में मेरी बहुत उपेक्षा हुई है।''

यह सुनकर रामा काका दुखी हुए। उन्होंने लिली से माफी मांगते हुए कहा, 'लिली बेटा, आज से मैं तुम्हारी अच्छी तरह देखभाल करूंगा।'

इसके अगले कुछ दिनों तक वे लिली के लिए खास खाद लाते थे। उसे खूब प्यार करते थे। यह देखकर गुलाब को लिली से ईर्ष्या होने लगी। बाग में सभी को लगने लगा कि लिली के आने के बाद रामा काका भेदभाव करने लगे हैं। वह लिली को ही अधिक चाहते हैं।

अप्रैल का महीना आते-आते लिली स्वस्थ हो गई। एक शाम लिली ने रामा काका से कहा, ''काका, अब मैं खुश हूं। मैं अब फूल देकर बाग को खूबसूरत बनाऊंगी, लेकिन यह सिर्फ अप्रैल महीने के लिए होगा।''

यह सुनकर रामा काका के साथ बाग के सारे पेड़-पौधे खुश हो गए। इस तरह लिली ने अप्रैल के महीने में खूब सारे सुंदर-सुंदर फूल दिए। उसके बाद लिली हर साल अप्रैल के महीने में फूल देने लगी। यही प्रक्रिया निरंतर चली आ रही है। यहां तक कि आज भी यह लिली अप्रैल के महीने में फूल देती है। इस प्रकार उसे एक खास नाम 'अप्रैल लिली' मिल गया है। ❑

–नरेन्द्र फोटो कॉपी,
पोस्ट-खरोरा, जिला-रायपुर
(छ.ग.)-493225

कस्तूरबा

–विश्वास पाटील

बेचर स्वामी जी ने मोहन को शपथ दिलाई। मां ने अनुमति प्रदान की। कस्तूर करीब के कमरे में थी। उसने सब कुछ सुन लिया था। वह भी तो यही चाहती थी। मां ने सब कुछ साफ-साफ कह दिया था, इससे वह खुश थीं उसकी गोद में कुछ माह का बालक था। आंखों में आंसुओं के बादल उमड़-घुमड़ रहे थे। दिल में बड़ी-बड़ी आशाएं थीं। आंसू और मुस्कान लुकाछिपी खेल रहे थे। धूप और छांव एक-दूसरे को पकड़ने के लिए बेताब थे। सुख और दुख का द्वंद्व जारी था।

विदाई देने रिश्तेदार और दोस्त बंबई (मुम्बई) आए थे। कस्तूर घर पर रुकी रही। वह तीन सालों तक अकेली रही। मोहन जाति-बहिष्कृत था। उसके साथ वह और नन्हा-सा हरि भी जाति बहिष्कृत था। मायके जाने की राह बंद हो गई थी। उसके लिए दिन लंबे और रातें प्रदीर्घ हो गई थीं। सारा आसमान कितना-कितना बदल गया था। आंगन कैसा पराया हो गया था। ग्रह-नक्षत्रों की गति का गणित कैसा विलोम-विपरीत हो गया था। अब भी घर तो वही था। नन्हे हरि का साथ था। इससे मिठास बची थी। हरि की शरारतें देख कर पुतली बा को मोहन का बचपन याद आता।

4 सितंबर, 1888 मोहन ने विलायत यात्रा का आरंभ किया। यह दरिया का सफर था। इस सफर में आदमी की कहां कोई साथ-सोहबत होती है? तूफानी हवा उफनती है। जगमगाते तारे होते हैं। खुला आसमान होता है। तैरते जल पखेरू होते हैं। दिन में तपा हुआ सूरज तो रात में बदलती कलाओं वाला चंद्रमा होता है। कभी पूर्णावस्था का चांद तो कभी अंधकार भरी रात। बाकी तो मल्लाहों के साहस का साथ होता है। विविध सजीव जलचरों की भाग-दौड़ की सोहबत होती है। वनस्पति एवं शैवालों के भेदक जाल होते हैं।

मोहन विलायत जा पहुंचा। उसे घर की बरबस याद आया करती। मां का प्रेम साकार होता। रात होते ही रोना आता। घर की यादें सतातीं। नींद रूठी रहती। घर से मिठाई मिली हुई थी। मोहन की

पसंद-नापसंद से कस्तूर खूब परिचित थी। कौन-सा पदार्थ दिया जाए? कौन-सा पदार्थ अधिक दिनों तक टिक सकता है? व्यंजन में शक्कर कितनी होनी चाहिए? साथ में सास थीं। मोहन राह ताकता रहता। घर से आने वाली मिठाई जैसे पदार्थ समय पर पहुंच जाया करते थे।

पुतली का सुहाग दूर था। उसे वियोग ने निगल लिया। कस्तूर विरह की मारी थी। ससुर जी का निधन पहले ही हो चुका था। दीवान घर से ममता का साया उठ गया था। जेठ जी ने करोबार संभाल लिया था। जेठानियों का ज्यादातर समय अब पूजा-पाठ में बीता करता। घर के काम तो कम होने का नाम नहीं ले रहे थे। कस्तूर पर घर की बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी थी। वह टूट-बिखर गई थी। विरक्त पुतली बा के पंखों तले वह सुरक्षित थी, फिर भी अब तो केवल दुख ही दुख बचा हुआ था। वेदना का तूफान और बेबसी की हठीली हवाएं बह रही थीं। घर में खाने वाले सदस्य बढ़ गए थे। कमाई कम हो गई थी। उधर मोहन का विलायत पढ़ने का खर्च कम होने का तो कोई सवाल ही नहीं था। घर कर्ज में डूब गया था। कस्तूर अपने बालक के साथ अपने जेठ पर अवलंबित थी। यह भावना उसका दिल कुरेदती रही। पहले पूरा घर सुव्यवस्थित था। एक घर में बर्तन-भांडे बिना आवाज किए साथ-साथ खुशहाल थे। पहले उनकी एक-दूसरे से कोई टकराहट नहीं हुआ करती थी, सो बात नहीं, लेकिन आवाज का पता नहीं चलता था। अब तो हर एक बर्तन का स्वतंत्र अस्तित्व ध्यान में आने लग गया था। पहले सबकी समझदारी की आड़ में ढकी रहने वाली आवाज अब शोर मचाने लग गई थी। वह अब हमेशा की तुलना में जल्दी जाग जाया करती थी। देर से सोती। उसकी कमर में दर्द शुरू हो गया था। हाथ-पांव थक जाते थे। पिंडलियों में गोले आते। जी घबराहट से भर जाता। आंखें भर-भर जाती। आंसू टपटपाने लगते। मां की याद सताती। किसी कंटीले पौधे में घायल हो गिरे हुए परिंदे की तरह वह बेहाल थी। पुरानी यादें उसके मनवृक्ष की डालियों पर विह्वल हो रही थीं। नजर अतीत की सरहदों पर किसी अतृप्त पिशाच की तरह रेंगती रहती।

अपने बचपन की सुख-वैभव की यादों को उसने पूर्ण विराम दे दिया था। नए कपड़े तो कल्पना से परे थे। मोहन के लिए गुड़ पापड़ी बना देने का आनंद और उत्साह कायम था। हर बार जेठानी जी को पूछना होता था। हर काम में उनकी सलाह जरूरी थी। वह रोज मोहन की राह देखती। आज मोहन आने वाला नहीं यह जानते हुए भी वह राह तकती। विलायत उसके लिए एकदम कल्पनातीत जगत की अंधेरी कंदरा थी। नया आसमान था। नया आंगन था। वह रोज कल्पना करती। मिथक और अद्‌भुत का सहारा लेती। अपने मन के पंख फैलती। उड़ने की तैयारी करती। वह सब कुछ उसकी कल्पना से परे की दुनिया थी। झूठी कल्पनाओं के राक्षस उसके मन पर हावी हो जाया करते थे। वहां मोहन क्या करता होगा? कहां खाता होगा? दोस्त कौन होंगे उसके? उसकी पढ़ाई कैसे चल रही होगी? मोहन के दोस्तों की याद आई और उसका मन गलत सोहबत की आशंका से कांप उठा। जैसे शेख मेहताब का चेहरा नजर आने लगा।

एक बार मोहन ने लंदन से अपना छायाचित्र भेजा। पुतली बा ने वह चित्र कस्तूर को दिया। चित्र देख कर तो वह भौंचक रह गई। क्या यह मेरा मोहन है? क्या अपना पति ऐसा है? उसे यकीन नहीं हो रहा था। छायाचित्र संपूर्ण नहीं था। वह था आधा ही चित्र। गहरे रंग का विलायती सूट पहना हुआ मोहन उसके लिए बिल्कुल अजनबी था। उसकी सफेद शर्ट। गले में टाई। गहरी आंखें। काले-काले बाल। गंभीर मुद्रा। यह सब-कुछ तो बहुत अपरिचित-सा लग रहा था। वह सोचती रही।

यह है अपने हरि का पिता। मेरा पति। हां, वह तो उसका मोहन था। उसका मन उससे बातें करने लगा। मेरा मोहन।

दया री, और पगड़ी कहां गई? और गले में यह पट्टी कैसी? बाल कैसे हुए हैं? यह तो बिल्कुल अजनबी मर्द लगता हे। उसने ध्यान से देखा। अजी हां, यह रहा उसका कान, दाईं और का सहज तत्पर हरि इन्हें कैसे भला पहचान पाएगा? मुश्किल तो है! मैं बताऊंगी न उसे।

विलक्षण आस्तिकतापूर्वक वह उस छायाचित्र की ओर देखती रही और देखती ही रही। उसे दिन चूल्हे पर रखा दूध उफन गया था। दाल जल गई थी। मक्खन की पतीली पर बिलाव ने झपट्टा मारा था। उसका किसी काम में ध्यान नहीं था।

एक दिन गली में कठपुतली का खेल दिखाने वाला आया था। शाम का समय था। हरि उसे देखने के लिए सबसे आगे था। पूरा आंगन बच्चों से पट गया था। खेल पूरा हुआ। बालक खेल दिखाने वाले के पीछे-पीछे चलता बना। घर-भर में उसकी खोजबीन की गई। उसे खोजते-खोजते कस्तूर थक गई। पुतली बा तो करीबी गली के आखिरी सिरे तक हो आईं लेकिन हरि का कहीं भी पता नहीं था वह खेलवाले के पीछे-पीछे चला गया था। पूरा घर 'हरि हरि' पुकारता रहा। कस्तूर की आंखें आंसुओं से भर गईं। आखिर पुतली के साथ पाया तब कहीं जाकर सबको चैन मिली।

पति पढ़ने के लिए विलायत गया है, इतना वह जानती थी। उसकी राह में पलक पांवड़े बिछाए वह बैठी थी। नन्हा हरि बहुत ऊधम मचाता। उसे मोहन की याद बेसब्री से आया करती थी। उसके लिए वह मनोरंजन का विषय भी था। उसके लिए समय से ताल मिलाने के लिए वही एकमात्र साधन था। वह विलायत की कल्पना तक कैसे भला कर सकती थी? आखिर कल्पना को भी यथार्थ का आधार चाहिए।

मोहन के भोजन विषयक प्रयोग शुरू हुए थे। वह 'शाकाहारी' साप्ताहिक का ग्राहक बना। शाकाहारी मंडल का सदस्य बना। शाकाहारी बैठकों में हाजिर रहने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने घर पत्र भेजा, 'इसके आगे मेरे लिए मिठाइयां न भेजी जाएं। मसाले न भेजे जाएं। मैंने वह सब कुछ बंद कर दिया है।' कस्तूर की चिंता बढ़ी। पुतली बा गहराई से सोचने लगीं। अब क्या किया जाए? कुछ बोलने का तो समय नहीं था। वह लिखना कहां जानती थी? घर में कोई मिठाई बनती तो उसे मोहन की याद सताती। मैं तो खा रही हूं, उन्हें कौन परस रहा होगा? उन्हें मन मार कर जीना पड़ रहा है। उसका मन काम में लगता नहीं था। हमेशा के लिए एक-ही-एक विचार। उसे मोहन की याद सताया करती। हम तो खा रहे हैं, उनके लिए क्या इंतजाम होगा? वह थक जाती।

उधर मोहन हमेशा घर की याद करता। मां की ममता उसे याद आती। उसके मन में मां की ममता हमेशा प्रार्थना के स्वरों-सी गूंजती रहती। कस्तूर की याद आती। नन्हे हरि की याद आती। इन यादों से उसकी नींद उचट जाती थी। अपना दुख बांटने के लिए उसके साथ कोई संगी-साथी नहीं था। वह अकेला था। निपट अकेला। अकेला मोहन। अकेली कस्तूर। आसपास के लोग पराए थे। उनकी आदतें अपरिचित थीं। घर अनजाने थे। अंग्रेजी रीति-रिवाज पालने के बारे में तो मोहन बिल्कुल अपरिचित था। शाकाहार की शपथ के कारण भी अड़चनें कम नहीं थीं। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'कस्तूरी परिमल' से साभार

कीमत : 210, पृष्ठ : 266

गणित की दुनिया का बादशाह
रामानुजन

–मनीषा

22 दिसंबर, 1887 को कोयंबटूर के इरोड गांव में भारत के महानतम गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जन्म हुआ। इस विलक्षण प्रतिभाशाली बालक ने कभी गणित की शिक्षा नहीं ली। वे बेहद जिज्ञासु बच्चे रहे, जो हर वक्त तरह-तरह के सवाल करता था। लेकिन अपनी लगन और प्रतिभा के बूते उन्होंने गणित विश्लेषण, अंक सिद्धांत की अनंत शृंखला की खोज की। अनसुलझी गणितीय प्रमेयों को तरतीब से सुलझाया। यहां तक की बाद में उन्होंने अपने सिद्धांत विकसित किए जिनका दुनिया भर में स्वागत किया गया। कैम्ब्रिज विद्यालय के नामी गणितज्ञ जीएच हार्डी को जब उनकी प्रतिभा का ज्ञान हुआ तो उन्होंने रामानुजन को इंग्लैड बुलाया। धन अभाव के चलते वे नहीं जा सकते थे इसलिए हार्डी ने उनके आने की व्यवस्था की। हार्डी ने लिखा- ''उन्हें और उनके साथियों को रामानुजन ने पूरी तरह पराजित किया। उनके जीवन दर्शन व प्रतिभा के हार्डी हमेशा कायल रहे। विशेष शोध के लिए कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने रामानुजन को बीए की उपाधि भी दी। उस वक्त भारत गुलाम देश था। इसलिए भारतीयों को उचित सम्मान नहीं मिलता था। मगर रामानुजन को रायल सोसायटी का फेलो चुना गया।''

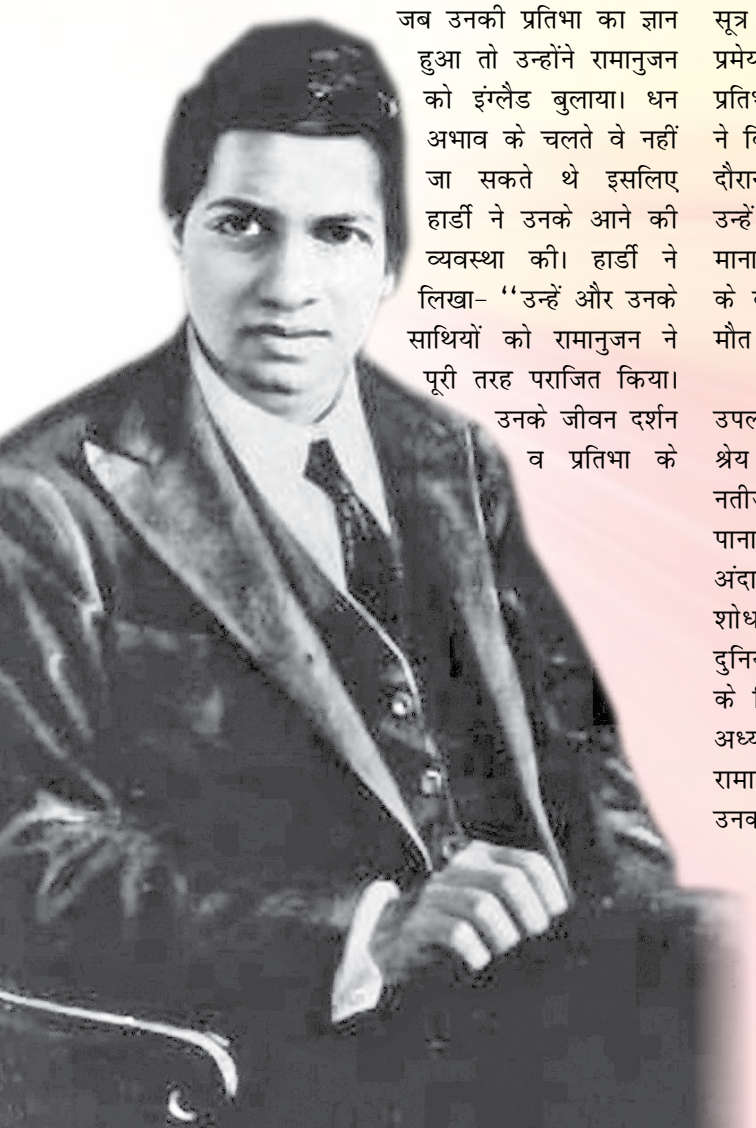

उनका जीवन बेहद संघर्षपूर्ण रहा। उन्हें गणित के अतिरिक्त किसी अन्य विषय में तनिक रुचि नहीं थी। इसलिए वे परीक्षाओं में अनुतीर्ण हो जाते। चूंकि परिवार निर्धन था तो बच्चों को पढ़ा कर किसी तरह कुछ पैसा कमा पाते। इसके बावजूद वे लगातार कागजों में गणित के सूत्र हल किया करते थे। गणित की अनुत्तरित व कठिन प्रमेयों को चुटकियों में हल कर लिया करते थे। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर चेन्नई (मद्रास) के जिलाधिकारी ने विशेष छात्रवृति देने की व्यवस्था की। लंदन प्रवास के दौरान ही वे बहुत बीमार हो गए। बाद में पता चला कि उन्हें क्षय रोग हो गया है। उस वक्त इसे छूत की बीमारी माना जाता था, जिसका कोई इलाज नहीं था। भारत लौटने के कुछ समय बाद ही 33 साल की अल्पायु में उनकी मौत हो गयी। इसे दुनिया ने गणित की निजी क्षति माना।

छोटी सी उम्र में उन्होंने गणित के क्षेत्र को तमाम उपलब्धियां दी। तकरीबन 3,884 प्रमेयों को सुलझाने का श्रेय उनको जाता है। बीजगणित के क्षेत्र में उन्होंने जो नतीजे दिये थे, उन्हें आज 100 साल बाद भी सुलझा पाना मुश्किल जान पड़ता है। उनकी प्रतिभा का सहज अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन पर अब तक शोध चल रहे हैं। उनके मूल व अपरंपरागत परिणामों ने दुनिया को चौंकाया। उनके सिद्धांतों को दुनिया में पहुंचाने के लिहाज से 'रामानुजन जरनल' की स्थापना की गई। अध्ययनकर्ताओं के लिए उनके सूत्र द रामानुजन प्राइम, द रामानुजन थीटा फंग्शन, पार्टीशन के नाम से प्रयोग में हैं। उनके अब तक कई सूत्र अप्रकाशित ही हैं। जिन पर छात्रों ने सालों साल काम किया है। ❑

–ग्रेटर नोएडा, जीबी नगर, उ.प्र.-201308

फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च, 1921 को बिहार के अररिया जिले में फॉरबिसगंज के पास औराही हिंगना गांव में हुआ था। रेणु की कहानियों और उपन्यासों में उन्होंने आंचलिक जीवन के हर धुन, गंध, लय, ताल, सुर, सुंदरता और कुरुपता को शब्दों में बांधने की सफल कोशिश की है। उनकी भाषा-शैली में एक जादुई सा असर है जो पाठकों को अपने साथ बांधकर रखता है। रेणु एक अद्‌भुत किस्सागो थे और उनकी रचनाएं पढ़ते हुए लगता है मानो कोई कहानी सुना रहा हो। ग्राम्य जीवन के लोकगीतों का उन्होंने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही सर्जनात्मक प्रयोग किया है। रेणु को जितनी ख्याति हिंदी साहित्य में अपने उपन्यास *मैला आंचल* से मिली, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। इस उपन्यास के प्रकाशन ने उन्हें रातो-रात हिंदी के एक बड़े कथाकार के रूप में प्रसिद्ध कर दिया।

जागो मन के सजग पथिक ओ...

–फणीश्वर नाथ 'रेणु'

मेरे मन के आसमान में पंख पसारे
उड़ते रहते अथक पखेरू प्यारे-प्यारे!
मन की मरु मैदान तान से गूंज उठा
थकी पड़ी सोई-सूनी नदियां जागीं
तृण-तरू फिर लह-लह पल्लव दल झूम रहा
गुन-गुन स्वर में गाता आया अलि अनुरागी

यह कौन मीत अगनित अनुनय से
निस दिन किसका नाम उतारे!
हौले, हौले दखिन-पवन-नित
डोले-डोले द्वारे-द्वारे!
बकुल-शिरिष-कचनार आज हैं आकुल
माधुरी-मंजरी मंद-मधुर मुस्काई
क्रिश्नझड़ा की फुनगी पर अब रही सुलग
सेमन वन की ललकी-लहकी प्यासी आगी
जागो मन के सजग पथिक ओ!
अलस-थकन के हारे-मारे
कब से तुम्हें पुकार रहे हैं
गीत तुम्हारे इतने सारे!

यह फागुनी हवा

–फणीश्वर नाथ 'रेणु'

यह फागुनी हवा
मेरे दर्द की दवा
ले आई...ई...ई...ई
मेरे दर्द की दवा!

आंगन ऽ बोले कागा
पिछवाड़े कूकती कोयलिया
मुझे दिल से दुआ देती आई
कारी कोयलिया–या
मेरे दर्द की दवा
ले के आई–ई–दर्द की दवा!

वन–वन
गुन–गुन
बोले भौंरा
मेरे अंग–अंग झनन
बोले मृदंग मन––
मीठी मुरलिया!
यह फागुनी हवा
मेरे दर्द की दवा ले के आई
कारी कोयलिया!
अग–जग अंगड़ाई लेकर जागा
भागा भय–भरम का भूत
दूत नूतन युग का आया
गाता गीत नित्य नया
यह फागुनी हवा...!

उपहार में दीजिए पुस्तकें

विश्व पुस्तक दिवस

चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

विद्यालय से वापस आते हुए बहुत प्रसन्न लग रहा था और वह मन ही मन में सोच रहा था.....

आज दुनियाभर में विश्व पुस्तक दिवस मनाया जा रहा है। किताबों को पढ़ने वाले और चाहने वालों के लिए आज खास दिन है। कंप्यूटर और इंटरनेट की दुनिया में भी लोग किताबों को पढ़ना पसंद करते हैं। इसे विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस भी कहा जाता है। चूंकि किताबी दुनिया में कॉपीराइट एक अहम मुद्दा है, इसलिए विश्व पुस्तक दिवस पर इस पर भी जोर दिया जाता है। इसी वजह से दुनिया के कई हिस्सों में इसे विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस के तौर पर भी मनाया जाता है।

आज विद्यालय में जिस पुस्तक दिवस के बारे में बताया गया है उसको कब और किसने शुरू किया..?

बेटा 23 अप्रैल 1995 में पहली बार यूनेस्को ने विश्व पुस्तक दिवस की शुरुआत की थी। लोगों के मन में पुस्तक प्रेम को जागृत करने के लिए इस दिन का मनाया जाता है। यूनेस्को हर साल इस मौके पर कार्यक्रमों का आयोजन करता है और विश्व पुस्तक दिवस की *थीम* तैयार करता है। इसकी मदद से यूनेस्को लोगों के बीच किताब पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना चाहता है।

अगर आप भी विश्व पुस्तक दिवस मना रहे हैं तो देर किस बात की, अपने मित्र और रिश्तेदारों को उपहार में दीजिए एक अच्छी सी किताब।

पहला विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैल, 1995 को मनाया गया था। यूनेस्को ने यही तारीख तय की थी।

इस तारीख के साथ खास बात यह है कि इस दिन को मिगेल डे सरवाटिस के अलावा महान लेखक विलियम शेक्सपियर का देहांत हुआ था, आज उनकी 402वीं पुण्यतिथि है। गौरतलब है कि मिगेल डे सरवाटिस और विलियम शेक्सपियर का देहांत एक ही दिन 23 अप्रैल 1616 में हुआ था।

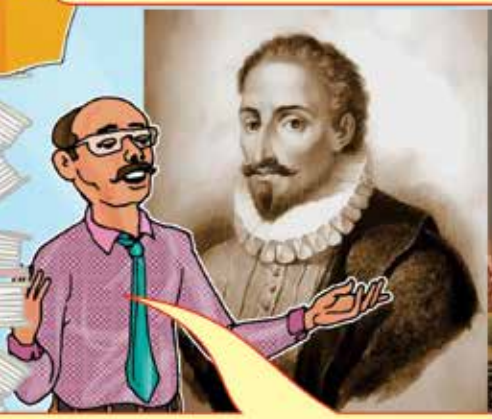

23 अप्रैल को मनाने का विचार स्पेन की एक परंपरा से आया। स्पेन में हर साल 23 अप्रैल को 'रोज डे' मनाया जाता है। इस दिन लोग प्यार के इजहार के तौर पर एक–दूसरे को फूल देते हैं। 1926 में जब मिगेल डे सरवाटिस का निधन हुआ तो उस साल स्पेन के लोगों ने महान लेखक की याद में फूल की जगह किताबें भेंट की। स्पेन में यह परंपरा जारी रही जिससे विश्व पुस्तक दिवस मनाने का आइडिया आया।

विलियम शेक्सपियर को विश्व का 'साहित्य सम्राट' भी कहा जाता है। आज भी उनकी लिखी किताबों को लोग पढ़ना पसंद करते हैं। शेयरपियर के प्ले (नाटक) आज भी लोगों के बीच जिंदा हैं। स्पेन के विख्यात लेखक मिगेल डे सरवाटिस की पुस्तकें भी खासी लोकप्रिय हैं। विश्वभर में लेखकों और पुस्तकों को सम्मा. नित करने के लिए साल 1995 में पेरिस में हुए यूनेस्को जनरल कांफ्रेंस में विश्व पुस्तक दिवस को मनाने की घोषणा की गई थी।

यह दिवस विश्व भर के लोगों खासकर लेखकों, शिक्षकों, सरकारी व निजी संस्थानों, एनजीओ और मीडिया को एक प्लेटफॉर्म मुहैया कराता है, ताकि साक्षरता को बढ़ावा दिया जा सके और सभी लोगों तक शिक्षा के संसाधनों की पहुंच हो।

अरे वाह.....!

वर्ल्ड बुक डे के जरिए यूनेस्को रचनात्मकता, विविधता और ज्ञान पर सब के अधिकार के मकसद को बढ़ावा देना चाहता है।

स्पेन में दो दिनों तक रीडिंग मैराथन का आयोजन होता है। इसके अंत में एक लेखक को प्रतिष्ठित मिगेल डे सरवाटिस पुरस्कार दिया जाता है। स्वीडन में स्कूलों और कॉलेजों में लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।
दुनिया के अलग–अलग देशों में इस दिन को अपने हिसाब से मनाया जाता है। कहीं मुफ्त में किताबें बांटी जाती हैं तो कहीं प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है।
यूनेस्को के डायरेक्टर जनरल ने 2019 की थीम को शब्दों के माध्यम से समझाते हुए कहा कि 'पुस्तकें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक रूप है जो किसी चुनी हुई भाषा के माध्यम से और उसके हिस्से में रहती है।'
प्रत्येक पुस्तक को पाठकों की भाषा के अनुसार तैयार किया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार की भाषाओं का इस्तेमाल किया जाता है। इस साल यूनेस्को की अगुवाई में स्वदेशी भाषा का बढ़ावा दिया जाएगा।

विश्व पुस्तक दिवस को दुनिया भर में उन पुस्तकों के दायरे को पहचानने के लिए मनाया जाता है जिन्हें अतीत और भविष्य के बीच की कड़ी के रूप में देखा जाता है। जिसमें देश की संस्कृति और पीढ़ियों का वर्णन है। विश्व पुस्तक दिवस के दिन यूनेस्को के अलावा प्रकाशकों, किताब विक्रेताओं और लाइब्रेरी का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य संस्थान एक साल के लिए वर्ल्ड बुक कैपिटल का चुनाव करते हैं। साल 2019 के लिए संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह शहर को वर्ल्ड बुक कैपिटल बनाया गया है। इस साल के लिए शारजाह, यूएई को 'विश्व पुस्तक राजधानी' घोषित किया गया है। यह क्वालालंपुर, मलेशिया में साल 2020 में आयोजित किया जाएगा।
अच्छा तो इसीलिए लोगों में पुस्तक प्रेम को जागृत करने के लिए मनाए जाने वाले 'विश्व पुस्तक दिवस' पर जहां स्कूलों में बच्चों को पढ़ाई की आदत डालने के लिए सस्ते दामों पर पुस्तकें बांटने जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं, वहीं स्कूलों या फिर सार्वजनिक स्थलों पर प्रदर्शनियां लगाकर पुस्तक पढ़ने के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।
अगर आप भी विश्व पुस्तक दिवस मना रहे हैं तो देर किस बात की अपने मित्र और रिश्तेदारों को उपहार में दीजिए एक अच्छी सी किताब।

उपन्यास

पीटर पैन
घर की ओर

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित उपन्यास प्रसिद्ध लेखक जेम्स मैथ्यू बेरी के मूल उपन्यास *पीटर पैन* का हिंदी रूपांतर है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *रमेश तैलंग* ने बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

डाकुओं के जहाज़ में, जो अब डाकुओं का नहीं था, वैंडी, बच्चे और पीटर पैन नेवरलैंड से वापस जा रहे थे। श्रीमती डार्लिंग के मकान की तीसरी मंज़िल पर बच्चों का कमरा ठीक वैसा ही था जैसा वैंडी, जान और माइकल जाते समय छोड़ गए थे। श्रीमती डार्लिंग रोज़ कमरे की साफ-सफाई करवाती थीं। उन्हें आशा थी कि बच्चे एक-न-एक दिन जरूर लौटेंगे। इसलिए वह खिड़की के दोनों पल्ले हमेशा खुले रखती थीं, और रात में अक्सर ही कुर्सी पर बैठी रहा करती थीं। रात को खुली खिड़की से पीटर पैन और परी टिंकर बैल उड़ते हुए कमरे में आ उतरे। वे दोनों जान-बूझकर तेज़-तेज़ उड़ते हुए वैंडी, माइकल और जान से पहले उनके कमरे में आ पहुंचे थे।

पीटर ने टिंकर से कहा- ''खिड़की बंद कर दो। वैंडी और उसके भाई समझेंगे कि श्रीमती डार्लिंग ने खिड़की बंद कर दी है और फिर वह मेरे साथ नेवरलैंड वापस जाने की बात सोचने लगेगी।''

ओह! तो यह योजना थी पीटर पैन की। उसने ऊपरी मन से वैंडी को विदा ज़रूर दे दी थी, पर मन-ही-मन वह चाहता था कि वैंडी नेवरलैंड में उसके साथ ही रहे। पर क्या ऐसा हो सकता था?

वह मन-ही-मन कह रहा था- ''श्रीमती डार्लिंग, आप वैंडी से नहीं मिल सकेंगी क्योंकि वह कमरे में कैसे आएगी। हमने खिड़की जो बंद कर दी है।'' तभी उसने देख श्रीमती डार्लिंग की बंद पलकों पर दो आंसू झिलमिला रहे थे। निश्चय ही वह बच्चों के बारे में

सोच रही थीं। उन्हें याद कर रही थीं।

''वह चाहती हैं मैं बंद खिड़की खोल दूं पर मैं ऐसा नहीं करूंगा।'' पीटर बुदबुदाया। ''अच्छा क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वैंडी अपनी मां के साथ-साथ मेरे नेवरलैंड में भी रहें।''

पीटर खड़ा-खड़ा श्रीमती डार्लिंग की ओर देखता और सोचता रहा, फिर उसने बढ़कर बंद खिड़की को खोल दिया। उसने टिंकर बैल से कहा- ''आओ टिंकर, हम चलें। शायद यहां किसी को हमारी जरूरत नहीं है।''

कुछ देर बाद जब वैंडी, जान और माइकल वहां पहुंचे तो खिड़की के दोनों पल्ले खुले हुए थे। तीनों उड़ते हुए अंदर पहुंच गए।

''जान, क्या हम यहां पहले नहीं आ चुके हैं।'' माइकल बोला।

''कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है। यही तो है हमारा घर। हम नेवरलैंड की यात्रा पर गए थे और अब लौट आए हैं।''

तभी कमरे में संगीत गूंजने लगा।

''लौट आओ बच्चो, जल्दी आ जाओ।''

''यह तो मां हैं।'' वैंडी ने कहा- ''भला वह हमें कैसे भूल सकती है।''

थोड़ी देर बाद श्रीमती डार्लिंग कमरे में आई तो चौंक गई, तीनों बच्चे अपने-अपने पलंग पर लेटे थे। बच्चों के कान उनके शब्द सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे- अरे क्या सच, या मैं सपना देख रही हूं कि तीनों बच्चे लौट आए हैं। पर वैसा कुछ नहीं हुआ। वह अपलक ताकती खड़ी रही। उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे वह सपना देख रही है।

''मां!'' वैंडी ने पुकारा, फिर जान और माइकल ने भी आवाज़ दी। फिर तीनों दौड़कर मां से लिपट गए। सबकी आंखों में आंसू थे। श्रीमती डार्लिंग ने पुकारा तो बच्चों के पिता भी वहां चले आए। माता-पिता जैसे खुशी से झूम रहे थे। कमरे में खिलखिलाहटें गूंज रही थीं लेकिन खिड़की के बाहर हवा में तैरता पीटर पैन उदास था।

वैंडी के साथ नेवरलैंड से दूसरे बच्चे भी आए थे पर वैंडी ने उनसे बाहर ही प्रतीक्षा करने को कहा था। पहले वह मां और पिताजी को पूरी बात समझा देना चाहती थी। इसलिए निब्स, टूटल्स और उसके साथी खिड़की से नहीं सीढ़ियों से ऊपर आए और कमरे के दरवाज़े के बाहर खड़े होकर वैंडी के संकेत की प्रतीक्षा करने लगे।

माता-पिता इस प्रस्ताव से सहमत थे। उन्हें खुशी थी कि अब इस घर में नेवरलैंड से आए छह बच्चे भी साथ रहेंगे। फिर वैंडी ने संकेत किया तो निब्स, टूटल्स, जुड़वां-1, जुड़वां-2 तथा दूसरे बच्चे खुशी से नाचते हुए कमरे में चले आए। श्री और श्रीमती डार्लिंग ने बच्चों को लिपटा कर प्यार किया। फिर पति-पत्नी उनके रहने की व्यवस्था करने में जुट गए।

इस बीच पीटर पैन खिड़की के बाहर हवा में चक्कर काट रहा था। उसने संकेत किया तो वैंडी ने खिड़की खोल दी।

''गुड बाई वैंडी।'' पीटर ने कहा।

''तो तुम जा रहे हो?''

''हां!''

''क्या तुम मेरे माता-पिता से नहीं मिलना चाहोगे?'' वैंडी ने पूछा।

''नहीं।''

तभी श्रीमती डार्लिंग खिड़की के पास चली आई। उन्होंने पीटर को बता दिया कि नेवरलैंड ने छहों बच्चे अब उनके अपने हो गए हैं। वह उनका पूरा ध्यान रखेंगी।

सुनकर पीटर को संतोष हुआ, यही तो चाहता था वह।

''मैं तो समझती थी कि

परियां केवल कथाओं में होती हैं।'' श्रीमती डार्लिंग ने कहा।

तब वैंडी ने उन्हें वह सब बता दिया जो पीटर पैन ने उसे परियों के बारे में बताया था।

''तुम नेवरलैंड में अकेले रहोगे?'' वैंडी ने पूछा।

''नहीं मैं टिंकर के साथ उस घर में रहूंगा जो हमने मिलकर तुम्हारे लिए बनाया था। और परियां तो वहां सदा ही आया करती हैं।'' पीटर बोला, -''वैसे मैं उम्मीद करता हूं तुम भी समय-समय पर नेवरलैंड आया करोगी। जल्दी ही वहां रहने के लिए नए बच्चे आ जाएंगे।''

''हां, मैं वर्ष में एक बार एक सप्ताह के लिए आया करूंगी तुम्हारे पास'' वैंडी ने कहा। इसके बाद पीटर पैन वहां से उड़ गया। वैंडी और बच्चे उसे दूर जाता देखते रहे। वे उदास थे पीटर पैन से बिछुड़ने पर, तो खुश भी थे कि उन्हें माता-पिता मिल गए थे।

दिन, महीने, वर्ष बीतने लगे, बच्चे बड़े हो रहे थे। धीरे-धीरे उनकी उड़ने की शक्ति कम होने लगी।

वैंडी नेवरलैंड जाया करती थी, पीटर के साथ। एक बार उसने पूछा- ''तुम्हें कैप्टन हुक की याद है?''

''कौन कैप्टन हुक?'' पीटर ने पूछा। वह पिछली बातें भूलता जा रहा था। नेवरलैंड में अब नए बच्चे आ गए थे।

एक बार काफी समय तक पीटर उससे मिलने नहीं आया। वैंडी उसकी प्रतीक्षा करती रही। पता नहीं क्या बात थी। कहीं वह वैंडी को भी भूल तो नहीं गया था, बीते हुए समय की तरह। अगले वर्ष वह आया, पर उसे पिछली कोई बात याद नहीं थी।

समय बीतता रहा। इस बार पीटर पैन आया तो वैंडी की शादी हो चुकी थी। नेवरलैंड से आए बच्चे तथा माइकल और जान भी बड़े हो गए थे। वर्ष बीतते जा रहे

थे। फिर वैंडी ने एक बेटी को जन्म दिया। वैंडी ने उसका नाम रखा-जेन, फिर जेन भी बड़ी हो चलीं अब वह अपनी मां वैंडी से पीटर पैन के बारे में पूछा करती थी। वैंडी उसे अपने नेवरलैंड के अनुभव सुनाया करती थी।

एक दिन जेन ने वैंडी से पूछा- "मां, तुम्हें अपने बचपन के दिन याद है? कभी तुम भी तो मेरी तरह छोटी रही होगी।"

"उसी तरह जैसे आप उड़कर पीटर पैन के साथ नेवरलैंड गई थीं?"

"हां।"

"क्या तुम अब भी उड़ सकती हो?"

"नहीं क्योंकि मैं अब बड़ी हो गई हूं। मुझे पुरानी बातें याद नहीं।"

"पर मुझे याद हैं।" जेन ने कहा-"मैं जानती हूं पीटर पैन को।"

वैंडी आश्चर्य से बेटी की ओर देखती रह गई।

फिर एक रात की बात। जेन आराम से सो रही थी। वैंडी उस कुर्सी पर बैठी थी जिस पर उसकी मां श्रीमती डार्लिंग बैठा करती थीं। तभी खिड़की के पल्ले अपने-आप खुल गए और पीटर पैन अंदर चला आया। वैंडी ने देखा और देखती रह गई। पीटर पैन वैसा ही छोटे बच्चे जैसा था, जब वह पहली बार वैंडी से मिला था, वह तो वही था, पर वैंडी बड़ी हो गई थी।

"हेलो वैंडी! कैसी हो?" पीटर ने पूछा।

"कहो पीटर कैसे हो?" वैंडी ने कहा। उसे दुख हो रहा था कि वह बड़ी क्यों हो गई, पीटर पैन जैसी ही क्यों न रही?

"जॉन कहां है?" पीटर ने पूछा।

"वह अब यहां नहीं रहता।" वैंडी ने बताया।

"और पलंग पर क्या माइकल सो रहा है?" पीटर जेन को माइकल समझ रहा था।

तब वैंडी ने पूरी बात बता दी। कहा-"केवल तुम्हीं नहीं बदलते हो। शेष हम सब तो बदलते चले जाते हैं। पलंग पर मेरी बेटी जेन सो रही है।"

"चलो, मैं तुम्हें लेने आया हूं।"

"मैं नहीं चल सकती। मैं उड़ना भूल चुकी हूं।"-वैंडी ने कहा।

"तो क्या हुआ, मैं तुम्हें फिर से उड़ना सिखा दूंगा।"-पीटर ने कहा।

"पीटर, मुझ पर परी-पराग नष्ट मत करो।" फिर वैंडी उठ खड़ी हुई। उसने लाइट जला दी।

पीटर अपलक वैंडी की ओर देखता रह गया। वह तो अब भी वैंडी को पहले जैसी छोटी समझ रहा था। "प्रकाश बुझा दो",- उसने कहा।

क्या वैंडी उसे बता सकती थी कि वह बूढ़ी होती जा रही थी।

पीटर पलंग पर लेटी जेन की ओर देखता रहा फिर फर्श पर बैठकर सिसकने लगा। वैंडी समझ नहीं पा रही थी कि उसको कैसे चुप कराए।

तभी जेन की नींद टूट गई। वह फर्श पर बैठे पीटर पैन की ओर देखने लगी।

पीटर पैन ने कहा-"मेरा नाम पीटर पैन है।"

"मुझे पता है।"-जेन ने कहा।

"मैं वैंडी को नेवरलैंड ले जाने के लिए आया हूं।"

"हां, मैं जानती हूं। मुझे तुम्हारी ही प्रतीक्षा थी।" और फिर पीटर पैन और जेन दो परिंदों की तरह कमरे में उड़ने लगे। पीटर ने कुछ परी-पराग जेन के शरीर पर लगा दिया था।

पीटर पैन खुली खिड़की से बाहर निकल गया, पीछे-पीछे जेन भी चली गई।

"नहीं, नहीं, जेन रुको, मत जाओ।" वैंडी चीख उठी। ❑

-समाप्त

कीमत : 120, पृष्ठ : 65

जन्म और प्रारंभिक जीवन

भीमराव आम्बेडकर

अनुसूचित जाति में महार जाति ऐसी जाति है जो शक्तिशाली, समझदार, लड़ाकू और बहादुर कही जा सकती है। कुछ लोगों का विचार है कि महार ही महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। महाराष्ट्र महार-राष्ट्र से ही बना है। भारत में यूरोपियन सबसे पहले महारों के ही संपर्क में आए। वह सेना में भर्ती हुए लेकिन 1892 में सेना में महारों की भर्ती बंद कर दी गई। आम्बेडकर के पिता रामजी ने इस अन्याय का विरोध किया। उन्होंने एम.जी. रानाडे से संपर्क स्थापित किया और बंबई के गर्वनर से मुलाकात की 16 फरवरी, 1917 को वह आदेश रद्द कर दिया गया जिसके अनुसार अनुसूचित जातियों की भर्ती बंद कर दी गई थी और प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान महार बटालियन (111) की स्थापना की गई।

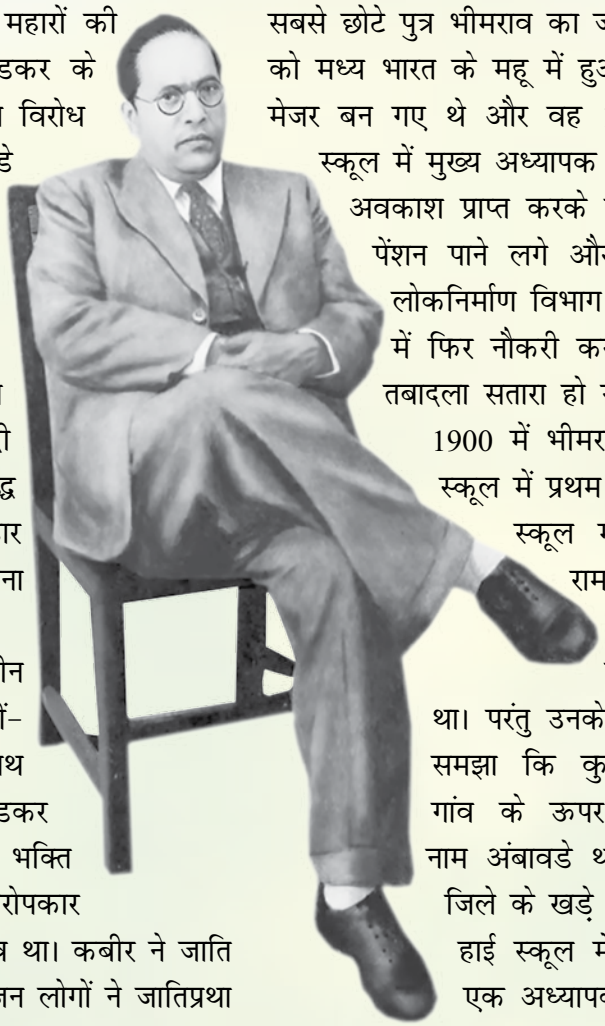

महारों में विशेषकर तीन प्रमुख भक्ति शाखाएं थीं। ये थीं- कबीर पंथ, रामानंद मत और नाथ संप्रदाय। 1896 में रामजी आम्बेडकर कबीर के अनुयायी बन गए। भक्ति आंदोलन का मूलमंत्र दया, परोपकार और ईश्वर के प्रति समर्पण भाव था। कबीर ने जाति प्रथा को दुत्कारा था इसलिए जिन लोगों ने जातिप्रथा की अवर्णनीय यातनाएं झेली थीं, वे कबीर के भक्त बन गए।

आम्बेडकर के पितामह मालोजी सकपाल रत्नागिरी जिले के एक अच्छे महार परिवार के सदस्य थे। वह एक अवकाश प्राप्त सैनिक थे। रामजी ने भी सेना से ही अवकाश प्राप्त किया। इनके 14 बच्चे थे। उनके सबसे छोटे पुत्र भीमराव का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य भारत के महू में हुआ था। रामजी सूबेदार मेजर बन गए थे और वह 14 साल तक सैनिक स्कूल में मुख्य अध्यापक रहे। 1891 में सेना में अवकाश प्राप्त करके वह 50 रुपये मासिक पेंशन पाने लगे और उन्होंने रत्नागिरी में लोकनिर्माण विभाग में स्टोरकीपर के रूप में फिर नौकरी कर ली। बाद में उनका तबादला सतारा हो गया।

1900 में भीमराव सतारा के सरकारी स्कूल में प्रथम कक्षा में दाखिल हुए। स्कूल में उनका नाम भीवा रामजी अंबावेडकर लिखा गया। उनके परिवार का कुलनाम सकपाल था। परंतु उनके पूर्वजों ने यह बेहतर समझा कि कुलनाम अपने पुश्तैनी गांव के ऊपर रखा जाए जिसका नाम अंबावडे था। यह गांव रत्नागिरी जिले के खड़े ताल्लुका में है। सतारा हाई स्कूल में आम्बेडकर नाम के एक अध्यापक थे जो भीमराम को

अत्यधिक प्यार करते थे और अक्सर उन्हें खाना भी खिलाया करते थे। यह अध्यापक बहुत ही कृपालु और दयावान थे। इसलिए अपने अध्यापक के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करने के लिए भीमराव ने अपना नाम आम्बेडकर रख लिया और जिस अध्यापक ने उनके छात्र जीवन में उन्हें इतना दुलार दिया उसका वे आजीवन आभार मानते रहे।

छुआछूत का प्रहार कितना भीषण है इसका अहसास आम्बेडकर को छात्र जीवन में ही हो गया। एक गाड़ीवान ने उन्हें और उनके भाई को अपने साथ गाड़ी में नहीं बैठने दिया था। आम्बेडकर और उनके भाई मसूर रेलवे स्टेशन से गोरेगांव जा रहे थे।

एक और कटु अनुभव यह था कि कोई नाई उनके बाल नहीं काटता था और भीम की बहन को ही उसके बाल काटने पड़ते थे। जातीय निरादर भाव सर्वत्र व्याप्त था। अपमानजनक और आमानवीय व्यवहार उनके सहधर्मी छात्रों ने स्कूल में भी उनके साथ किया, आम्बेडकर को कक्षा में भी अलग बैठना पड़ता था। वह अन्य छात्रों के साथ न मिल-जुल सकते थे और न ही खेल सकते थे। अध्यापक उनकी कापी नहीं छूते थे। ये कविता पाठ सुनने और प्रश्न पूछने से ही छूत लग जाने के भय से जी चुराते। स्कूल में जब उन लड़कों को प्यास लगती थी तो वे ऊपर की तरफ मुंह कर लिया करते थे और फिर कोई दया करके मुंह में इस प्रकार पानी डाल दिया करता था जैसे किसी कुप्पी में डाल रहा हो। संस्कृत शिक्षक बड़ा ही कट्टर था और वह अनुसूचित जाति के बच्चों को नहीं पढ़ाता था। हाई स्कूल परीक्षा के समय आम्बेडकर को दूसरी भाषा के रूप में फारसी को चुनना पड़ा।

सवर्ण जातियों के बच्चे अपने खाने के डिब्बे ब्लैक बोर्ड के पीछे रखा करते थे। एक दिन आम्बेडकर को ब्लैक बोर्ड पर कुछ लिखने का आदेश दिया गया। पर इस पर सवर्ण जातियों के बच्चे ब्लैक बोर्ड के पीछे से अपने खाने के डिब्बे हटाने के लिए दौड़े कि कहीं उसमें छूत न घुस जाए। अध्यापकों ने भी भीमराव को हतोत्साह किया। हालांकि यहां भी जातीय भेद-भाव ने उन्हें बार-बार हतोत्साहित किया।

आम्बेडकर ने 1907 में हाई स्कूल परीक्षा पास की। उनके परिवार के लिए यह एक अभूतपूर्व दिन था। अनुसूचित जाति के एक विद्यार्थी द्वारा मैट्रिक की परीक्षा पास करना एक बहुत बड़ी बात थी। सत्यशोधक आंदोलन के एक नेता एस.के.ए. बोले के नेतृत्व में एक समारोह किया गया। के.ए. केलुस्कर ने, जिन्होंने बाद में शिवाजी का वृहद् जीवन चरित भी लिखा, आम्बेडकर को गौतम बुद्ध की एक जीवनी भेंट की।

उनके छात्र जीवन की एक उल्लेखनीय घटना उनका विवाह भी था। जब रमाबाई नाम की 9 वर्षीय सुशील बालिका के साथ उनका विवाह हुआ उस समय वे केवल 14 साल के थे और पांचवीं कक्षा में पढ़ते थे। ❑

–प्रकाशन विभाग की लोकप्रिय शृंखला
'आधुनिक भारत के निर्माता' की पुस्तक 'भीमराव आम्बेडकर' से साभार
कीमत : 120, पृष्ठ : 146

कनॉट सर्कस

–प्रकाश मनु

भुल्लन चाचा को हुल्लारीपुर गांव से हमारे घर आए बहुत दिन हो गए थे। पर दिल्ली अभी तक उनके लिए अनजानी ही थी। बस, सरोजिनी विहार कॉलोनी का एक झूले वाला पार्क था, जहां वह सुबह-शाम हो आया करते थे।

अकसर मैं और गौरी दीदी उनके साथ होते। हम दोनों उनका मन लगाने की बहुत कोशिश करते थे। पर भुल्लन चाचा तो अभी तक जैसे गांव हुल्लारीपुर में ही थे। गांव की गलियां, सड़कें, कच्चे-पक्के घर। गांव की ओस की बूंदों में नहाई हंसती-गाती हरियाली। वहां की धींगामस्ती, रौनक-मेला। खूब बड़ा सा तालाब और उसके किनारे खड़ा बरगद का बड़ी-बड़ी जटाओं वाला विशाल पेड़। और सबसे बढ़कर, वहां सुबह-शाम की राम-जुहार और हंसी-दिल्लगी।...

सब कुछ उन्हें याद आता। बार-बार याद आता, और वे कुछ उदास हो जाते।

मैंने पापा से कहा तो वह हंसकर बोले, ''अगले इतवार को छुट्टी होगी तो भुल्लन को कनॉट सर्कस घुमा लाऊंगा। थोड़ा सा तो उसका मन बदलेगा।''

पापा ने तरंग में आकर भुल्लन चाचा के दिल का तार छेड़ दिया था। बोले, ''भुल्लन, अभी तुमने दिल्ली देखी कहां है? चलो, इस बार तुम्हें कनॉट सर्कस दिखाएंगे।''

सुनकर भुल्लन चाचा के भीतर बड़ी गुदगुदी सी होने लगी। सच्ची पूछो तो उनके मन में जाने कब से छिपी हुई इच्छा थी कनॉट सर्कस देखने की। बरसों से नाम सुनते आए थे दिल्ली के कनॉट सर्कस का, कि उसका तो दुनिया की किसी चीज से मुकाबला ही नहीं। और लो जी, अब वह देखने को भी मिल रहा है। इसे कहते हैं किस्मत...!

सो ललककर बोले, ''हां-हां, भैया, मैंने भी दिल्ली के कनॉट सर्कस का बड़ा नाम सुना है। गांव में भी लोग कहते थे कि भुल्लन, दिल्ली जा रहे हो तो कनॉट सर्कस जरूर देखना।... अच्छा रहेगा, इस इतवार को बना लीजिए प्रोग्राम।''

''हां, सोचता हूं, इस इतवार को सब लोग चलें। इसी बहाने थोड़ा बाहर निकलना हो जाएगा।'' पापा मुसकराए।

मगर एक-एक कर कई इतवार निकल गए। पापा दफ्तर के काम में व्यस्त थे। रात को देर-देर से घर आते। छुट्टी वाले दिन के लिए भी साथ काम बांध लाते। सो भुल्लन चाचा को कनॉट

सर्कस दिखाने का प्रोग्राम बन ही नहीं पा रहा था।

बेचारे भुल्लन चाचा कुछ उदास से हो गए। एक-दो बार मुझसे और गौरी दीदी से कह भी चुके थे, ''देखो, दिल्ली आए हुए इतना समय हो गया। मगर कनॉट सर्कस तो देखा ही नहीं। मेरा भी कैसा भाग्य है...! भाई साहब को समय ही नहीं मिल पा रहा।... अब मैं गांव जाऊंगा तो लोगों से क्या कहूंगा? वहां सब पूछेंगे कि भुल्लन दिल्ली गए थे, तो कनॉट सर्कस देखा कि नहीं?''

गौरी दीदी बोली, ''बस भुल्लन चाचा, आप मन बना लीजिए। मैं और निक्का भी पापा के कान खाएंगे। कचर-कचर...

गौरी की बात सच निकली। सच्ची-मुच्ची अगले हफ्ते मुहूर्त निकल ही आया। इतवार को सुबह-सुबह पापा ने मुसकराते हुए कहा, ''चलो भुल्लन, तैयार हो जाओ। आज चलते हैं कनॉट सर्कस देखने।''

सुनते ही भुल्लन चाचा की खीसें निकल गईं। कोई डेढ़-दो फुट उछलकर बोले, ''सच्ची भैया, सच्ची...?'' और वह चिल्ला-चिल्लाकर पूरे घर को बताने लगे, ''कनॉट सर्कस देखेंगे जी, कनॉट सर्कस। आज आएगा मजा...!''

उनके भीतर रह-रहकर खुशी का गुब्बारा फूट रहा था। चलो, दिल्ली आने का एक तो फायदा हुआ। इतना मशहूर सर्कस देखने को मिल गया। लोग कहते हैं, सारी दुनिया में मशहूर है। बड़े-बड़े अंग्रेज भी देखने आते हैं। और खाली अंग्रेज ही क्यों? चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी और अमरीका के लोग भी।...अरे भई, क्यों न होगा? चीज ही ऐसी है। और फिर दिल्ली देश की राजधानी जो ठहरी। जो चीज दिल्ली में है, उसका तो सारी दुनिया में हल्ला होगा ही।''

कहते-कहते उन्हें शहर की सालाना नुमाइश में देखा हुआ अपोलो ग्रैंड सर्कस याद आ गया, जिसमें पहली बार उन्होंने मौत का कुआं देखा था। साथ ही हाथी और शेर के बड़े ही अनोखे करतब। जोकर और छुरियों वाला रोमांचक खेल भी। सोचने लगे, ''वह भी ठीक था, मगर यों तो जी, सर्कस बहुतेरे हैं, अपोलो सर्कस, ग्रेट इंडियन सर्कस, ग्रैंड एशिया सर्कस... और भी न जाने कौन-कौन से! बहुतों के तो नाम भी याद नहीं हैं। पर कनॉट सर्कस की तो बात ही क्या है। इसका तो चारों तरफ नाम है। पूरी दुनिया में मशहूर...!''

भुल्लन चाचा कार की खिड़की के पास ही बैठे थे। सोच रहे थे, बड़े से परदे पर हाथी, शेर और न जाने कौन-कौन से जानवर बने होंगे, खेल दिखाने वाले पोज में। हाथी सूंड उठाकर सरपट भागता हुआ। शेर बिजली की सी फुर्ती से छलांग लगने को तैयार।... और परदा भी ऐसा-वैसा नहीं, बड़ा शानदार होगा। एकदम सिलवर स्क्रीन। या फिर हो सकता है, फोर कलर में हो। शानदार।... फिर वैसा ही आलीशान तंबू भी, जिसके भीतर खेल दिखाया जाएगा।... पर, जाने क्या बात है, अभी तक परदा तो दिखा ही नहीं। वैसा बड़ा-बड़ा तंबू भी नहीं है।

और लो जी, थोड़ी देर में ही पापा की कार में हम सब कनॉट सर्कस पहुंच गए।

वहां पहुंचते ही गौरी दीदी और मैंने जोर से 'हुर्रे...!' करके कनॉट सर्कस का स्वागत किया। पर भुल्लन चाचा...? वह तो चुप, एकदम चुप थे। शांत। शायद उनका कनॉट सर्कस अभी नहीं आया था।

गाड़ी पार्क करके हम सब लोग चल पड़े पालिका बाजार के ऊपर बने सदाबहार पार्क में, जहां इस समय रंग-रंग के गुलदाउदी और पैंजी के फूलों की बहार थी। मस्त-मस्त गेंदे के फूलों क्यारियां भी थीं। और हां, बोगनबेलिया के बड़े-बड़े झाड़...! सफेद, लाल, पीले, गुलाबी, हर रंग के बोगनबेलिया। बड़े ही खूबसूरत और शरारती। हवा से ठिठोली

करते हुए। लगता था, जैसे होली के गुलाल के बड़े-छोटे पहाड़ हों सामने। उन्हें देखकर मेरा और गौरी दीदी का दिल खुश हो गया।

गौरी तो उन्हें देख-देखकर उछल रही थी। उसने भुल्लन चाचा का कंधा झकझोड़कर कहा, ''भुल्लन चाचा, भुल्लन चाचा, देखो फूल...! कितने प्यारे-प्यारे...!!''

पर भुल्लन चाचा का ध्यान कहीं और ही था। सामने कुछ बच्चे छुट्टी की तरंग में मगन होकर पतंग उड़ा रहे थे। भुल्लन चाचा की आंखें वहीं अटकी थीं।

पास ही लंबी दाढ़ी वाला एक बूढ़ा आदमी प्लास्टिक की उड़ने वाली रंग-बिरंगी चिड़िया बेच रहा था। उनमें से एक चिड़िया उसके सिर के चारों ओर गोल-गोल घूम रही थी। देखकर लोग हैरान। सवाल तो यह था कि चिड़िया उड़ कैसे रही है?

लोग यह राज जान पाते, इससे पहले ही उस दाढ़ी वाले बूढ़े ने एक और करतब किया। उसने अपने झोले में से नीले रंग का हवाई जहाज निकाला और वह भी उड़ने लगा। जैसे चिड़िया उड़ रही थी, वैसे ही हवाई जहाज। दोनों झूं-झूं का अजीब सा गाना गाते हुए उसके सिर के चारों ओर गोल-गोल चक्कर काट रहे थे। आगे-आगे चिड़िया, पीछे हवाई जहाज।

कमाल यह था कि हवाई जहाज चिड़िया के पास पहुंचता तो था, पर दोनों आपस में टकराते नहीं थे और वे घूमे जा रहे थे, गोल-गोल, गोल-गोल...!

यह ऐसा मजेदार नाटकीय दृश्य था कि देखकर बूढ़ा खिलौने वाला ठठाकर हंसा। पास खड़े दर्शक भी हंसने लगे।

आखिर भुल्लन चाचा की उत्सुकता देख, पापा ने उन्हें वह जादुई चिड़िया और उड़ने वाला हवाई जहाज दोनों खरीदकर दे दिए। पर भुल्लन चाचा का साफ इनकार। बोले, ''पहले इस चिड़िया और जहाज का भेद क्या है, यह पता चले। तब लूंगा मैं यह चिड़िया भी, जहाज भी।''

इस पर बूढ़े खिलौने वाले ने हंसते हुए उनका रहस्य भी प्रकट कर दिया। एक बिल्कुल पतले से धागे से वह चिड़िया बंधी थी, हवाई जहाज भी। उसी धागे और उंगलियों के कमाल से वे उड़ रहे थे, जिनकी लीला आंखें पकड़ नहीं पा रही थीं। और वह धागा तो इतना बारीक था कि आंखों से कतई नजर नहीं आता था। सो खेल का खेल और जादू का जादू...!

भुल्लन चाचा ने धीरे से सिर हिलाया, जैसे कह रहे हों-यह हुई न बात...!! बूढ़े खिलौने वाले की जादूगरी उन्हें सचमुच भा गई थी।

वहां से आगे गए तो हरे कपड़े पहने एक विचित्र आदमी नजर आया। उसके पास ढेर सारे पिंजरे थे। हर पिंजरे में अलग चिड़िया। कुछ देखी-भाली तो कुछ अजब-अनोखी रंग-बिरंगी चिड़िया थीं। एक पिंजरे में तोता भी था। उसके आसपास बच्चे-बड़े सभी की भीड़ थी। वह हंस-हंसकर सबको उन चिड़ियों की खासियतों के बारे में बता रहा था, ''देखो जी, यह ललमुनिया है, यह बुलबुल...

यह मैना, यह फुलचुक्की...! जरा देखो इसकी चोंच, देखो इसके पंख...! और पता है बेटे, यह क्या खाती है...?''

इतने में पापा का ध्यान गया, भुल्लन नजर नहीं आ रहा है। परेशान होकर बोले, ''भुल्लन किधर निकल गया? दिखाई नहीं पड़ रहा।...

पापा ने आसपास आंखें दौड़ाईं तो भुल्लन चाचा पकड़ में आ गए। वे आंखों पर दूरबीन लगाए, पार्क में दूर-दूर के दृश्य देख रहे थे और खुश हो रहे थे। बीच में कभी-कभी वे आसमान के तारों पर भी अपनी आंखें टिका देते।

दूर से भुल्लन चाचा की यह अजब अदा देख, पापा चकराए। वे पास गए तो पता चला कि एक आदमी दूरबीन बेच रहा है। उसी ने भुल्लन चाचा को उलझा लिया है।

इस सबसे बेपरवाह कुछ विदेशी मिलकर गाना रहे थे। पास ही एक लड़का मगन होकर गिटार बजा रहा था और आसपास के लोग सुन रहे थे। कुछ लोग पैसे भी दे रहे थे। वह चुपचाप पैसे अपनी जेब में रख लेता और फिर उसी तरह गिटार बजाने में लीन हो जाता। जैसे खुद अपने ही सुरों में खो गया हो।

कुछ आगे खूब बड़ा सा मखमली लान था। जैसे हरा गलीचा बिछा दिया गया हो। बहुत से लोग लॉन पर बैठे थे। कुछ लेटकर धूप का आनंद ले रहे थे। एक फल वाली स्त्री संतरे और केले बेच रही थी। पास ही एक चाट वाला था जो आवाज लगाकर खूब जायकेदार गोलगप्पे बेच रहा था। और वहां बच्चों की अपार भीड़ थी।

एक औरत अपने छोटे बच्चे को साथ लिए सात गुब्बारों का गुच्छा बेच रही थी। उसके साथ चल रही दूसरी औरत पीं-पीं करती गुड़िया और वाटर बॉल बेच रही थी। दूर तक उसकी आवाज गूंज रही थी, ''वाटर बॉल...वाटर बॉल...! देखो-देखो, वाटर बॉल... जादू वाली वाटर बॉल...!''

इतने सारे दृश्य...! देख-देखकर भुल्लन चाचा मुग्ध थे। जैसे किसी और दुनिया में आ गए हों। दिल को लुभाने वाली इतनी सारी चीजें। एक से एक सुंदर और रंग-बिरंगी। भुल्लन चाचा इतने खुश कि कभी-कभी बिल्कुल छोटे बच्चों की तरह उचक-उचककर देखने लगते थे। और कभी-कभी तो खुश होकर तालियां पीटने लगते।

यों कनॉट सर्कस पहुंचकर हम सब खूब मस्ती से घूमे-फिरे और छुट्टी का पूरा आनंद लिया। पर लगा, भुल्लन चाचा थोड़ी उलझन में हैं। उनके भीतर शायद कोई और ही चक्की चल रही थी। इसलिए बीच-बीच में एकदम चुप्प-धुप्प हो जाते।

मम्मी को याद आया, ''अरे, खाना तो खाया ही नहीं। घूमते-घूमते देखिए, ढाई बज गए।. ..तो अब पहले घर से लाई पूरियां खा ली जाएं।''

चाट वाले से मेरे और गौरी के लिए एक-एक प्लेट दही-बड़े आ गए। भुल्लन चाचा ने आलू की टिक्की ली। साथ में आलू-मेथी की सब्जी तो थी ही, और स्वादिष्ट आम का अचार। सबने खाना शुरू किया तो पता ही नहीं चला कि पूरियों का इतना बड़ा पैकेट कहां हजम हो गया। सचमुच बड़े जोर की भूख लग आई थी।

पापा बोले, ''अच्छा ही हुआ, घर से खाना लेकर आ गए। बाहर घूमते हुए कई बार ज्यादा भूख लगती है। फिर कनॉट सर्कस में तो पैदल घूमने का ही आनंद है।''

'कनॉट सर्कस...!' सुनते ही भुल्लन चाचा को जैसे करंट सा लगा। एकदम उछलकर खड़े हो गए। बोले, ''अरे, आप लोग बैठ क्यों गए?...चलिए, चलिए, पहले चलकर सर्कस देख लेते हैं ना!''

''सर्कस, कौन सा सर्कस..?'' पापा को हैरानी हुई।

पर भुल्लन चाचा को उससे भी ज्यादा हैरानी हुई ''अरे, कमाल करते हैं आप भी...!'' भुल्लन चाचा को अब गुस्सा आ गया।

बोले, ''आप हमें तो कह रहे थे कि कनॉट सर्कस देखने चलेंगे, कनॉट सर्कस देखने। कनॉट सर्कस ऐसा है, वैसा है। अब सर्कस तो दिखा नहीं रहे हैं और ऊपर से कहते हैं कि...यहां बैठ लो, वहां घूम लो। अरे, यही सब करते रहे तो फिर सर्कस देखने का टाइम कहां रहेगा?...फिर अभी टिकट भी तो खरीदना है सर्कस का! बिना टिकट के भला कौन सर्कस देखने देगा?''

इस पर पापा एक पल के लिए तो भौचक्के ही रह गए। फिर इतने जोर की उनकी हंसी छूटी कि देर तक रुकी ही नहीं। बोले, ''भुल्लन, तुम क्या समझे, हम तुम्हें सर्कस दिखाने लाए हैं? जैसे अपोलो सर्कस...ग्रैंड एशिया सर्कस...वगैरह-वगैरह।''

भुल्लन चाचा गुस्से में बिफरते हुए कह रहे थे, ''ठीक है, नहीं दिखाना चाहते हों तो रहने दीजिए। मैं घर जाकर सबको बता दूंगा कि भैया ने दिल्ली में और तो और, कनॉट सर्कस तक नहीं दिखाया।''

पापा ने उन्हें ठंडे मन से पूरा माजरा समझाना चाहा, पर भुल्लन चाचा इतने गुस्से में थे कि कुछ भी समझने को तैयार नहीं थे।

इस पर मैंने और गौरी दीदी ने बड़े आराम से उनका गुस्सा ठंडा करके बताया कि कनॉट सर्कस का मतलब है, यहां का गोल-गोल वरांडों वाला एक खास किस्म का बाजार। यहां शेर, हाथी और जोकर के तमाशों वाला सर्कस कहीं नहीं है।

''तो यानी कि गोल-गोल है, इसीलिए सर्कस...!'' भुल्लन चाचा सिर खुजाते हुए बोले।

''हांज्जी! भुल्लन बाबू, गोल-गोल है इसीलिए सर्कस...!'' पापा खुलकर हंसे।

हमारी बात भुल्लन चाचा को समझ में आई तो उनकी आंखें मारे अचरज के फैली की फैली रह गईं, ''ऐं..! यानी कनॉट सर्कस में कोई सर्कस नहीं? कैसी बात करते हो...?''

''सच्ची बात तो यही है भुल्लन चाचा!'' मैंने हंसकर कहा।

''तो यानी निक्का, सर्कस माने बाजार...?'' भुल्लन चाचा ने झटके से गरदन उचकाई।

''हांज्जी चाचूजान, सर्कस माने बाजार...!'' मेरी और गौरी दीदी की भी तुर्की-ब-तुर्की।

''ओ...फ, कैसी निखद्द भाषा है अंग्रेजी भी!...एकदम ऊटपटांग भाषा। पता नहीं लोग इसे क्यों पढ़ते हैं?'' कहते-कहते भुल्लन चाचा ने मुंह बिचकाया और फिर ऐसे जोर का छतफाड़ ठहाका लगाया, कि आसपास बैठे विदेशी लोग भी चौंककर हैरानी से हम सबको देखने लगे।

उस दिन कनॉट सर्कस की सैर में मजे तो बहुत आए, मगर बेचारे भुल्लन चाचा एक बार चुप हुए तो उनकी बोली-बानी फूटी ही नहीं।

शाम होने को थी। पापा चलते-चलते जनपथ पर कपड़े खरीदने लगे। तभी उन्हें भुल्लन चाचा का खयाल आया।

''अरे भुल्लन, देखो, यह ग्रे वाली जर्सी तुम्हारे लिए ठीक रहेगी...?'' उन्होंने थोड़ा लाड़ से भरकर कहा।

पर भुल्लन चाचा को ग्रे नहीं, बादामी वाली जर्सी पसंद आई, जिस पर हंसता हुआ जोकर बना था, और पंजों पर उचककर अपना कोई करतब दिखा रहा था।

उस जर्सी का पैकेट हाथों में पकड़ते हुए भुल्लन चाचा की फिर से हंसी छूटी। हंसते हुए बोले, ''चलो, अच्छी जर्सी मिल गई। अब सबसे कह तो पाएंगे कि कनॉट सर्कस में सर्कस तो नहीं मिला, मगर एक जोकर जरूर मिला, उसे हम अपने साथ घर ले आए हैं!...''

इस पर पापा-मम्मी ही नहीं, मेरी और गौरी दीदी की भी बड़े जोर की हंसी छूट गई। और भुल्लन चाचा भी कनॉट सर्कस में सर्कस न देख पाने का सारा मलाल भूलकर जी खोलकर हंस रहे थे। ❑

–545 सेक्टर-29, फरीदाबाद, (हरियाणा), पिन-121008

अपने पैरों खड़े होने का सुकून

–सुषमा जुगरान ध्यानी

पहाड़ के इस छोटे से गांव की धजा आज बिल्कुल बदल चुकी है। कल तक पलायन की मार झेलने वाला यह गांव आत्मनिर्भर गांव घोषित किए जाने के बाद मीडिया में खूब सुर्खियां बटोर रहा है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि आत्मनिर्भर और आदर्श गांव का दर्जा इसे सरकारी फाइलों में ही नहीं मिला है बल्कि जमीनी स्तर पर तो यह उससे भी अधिक चमक बिखेर रहा है। सोशल मीडिया पर जब-तब ट्रेंड करता रहता है। कारण- आज यहां के लोगों में सरकार की *स्टार्ट अप, स्टैंड अप* और *कौशल विकास* जैसी अनेक विकास योजनाओं के प्रति जो जागरूकता आई है और जिस तरह लोग इनका लाभ उठा रहे हैं, उसके चलते यहां न केवल खेती-किसानी के प्रति लोगों का रुझान फिर से बढ़ने लगा है बल्कि पारंपरिक कुटीर उद्योगों के साथ ही नये उद्योगों को भी बढ़ावा मिल रहा है। पलायन के कारण बंजर खेतों का जो आंकड़ा दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था, वह धीरे-धीरे घटते हुए फिर से एक हरियाले गांव के रूप में अपनी पहचान और रौनक वापस पा रहा है। फर्क यही है कि अब यहां लोग पारंपरिक खेती से हटकर ऐसी नगदी फसलों और बागवानी के प्रति भी आकर्षित हो रहे हैं जिसके बारे में वे पहले बहुत जागरूक नहीं थे या कहिए, उसमें रुचि नहीं दिखाते थे। नियोजित तरीके से हो रही काश्तकारी का ही नतीजा है कि यहां के जो बाशिंदे, सालों-साल से गांव छोड़कर शहरों में छोटी-बड़ी नौकरी करते हुए अपने घर गांव को लगभग भूल चुके थे, उनमें से ज्यादातर आज अपने जर्जर घरों को ठीक करवा कर छुट्टियों में घर आने का सिलसिला शुरू कर चुके हैं और खेतों को भी गांव में रह रहे अपने नाते-रिश्तेदारों को बंटाई पर या कुछ समय की लीज पर देकर आबाद कर रहे हैं- यह सोचकर कि सेवानिवृत्ति के बाद वे भी जीवन के उत्तरार्ध का आनंद अपने पुश्तैनी गांव में लेंगे।

आप सोच रहे होंगे कि आखिर क्या खास है इस गांव में कि सरकार की फाइलों में दर्ज रिवर्स पलायन का नारा यहां जमीनी सच्चाई बनने

लगा है जबकि सैकड़ों गांव आज भी पलायन की मार झेल रहे हैं। इस भ्रम में न रहा जाए कि राज्य सरकार की कृपा दृष्टि इस पर कुछ ज्यादा रही होगी। राज्य की विकास यात्रा तो जिस तरह सालों साल से कागजों में दर्ज होती आ रही है, उसी तरह यहां भी विकास का पहिया घूमता है लेकिन यह हुआ केंद्र सरकार की विकास योजनाओं में से एक महत्वपूर्ण योजना 'स्टैंड अप' द्वारा, जिसकी सूत्रधार बनी एक ऐसी होनहार और कर्मठ लड़की, जो सामान्य जीवन जी रही होती तो कभी भी इस गांव का कायाकल्प नहीं हो सकता था। उसी की प्रेरणा से आज गांव के युवा सरकारी विकास योजनाओं का लाभ उठा छोटे-बड़े तमाम तरह के कारोबार करते हुए गांव को एक आदर्श गांव के रूप में विकसित करने में कामयाब हुए हैं।

राधा अपने माता-पिता की इकलौती बिटिया है। उसके पिता गांव से सटे कस्बे की एक दुकान में सेल्समैन थे। तीन साल पहले की बात है- बारहवीं की परीक्षा के बाद इंजीनियर बनने का सपना संजोये राधा इसके लिए जोर-शोर से तैयारी कर रही थी और पिता भी उसके सपने को साकार करने के लिए प्रेरित करते रहे थे लेकिन सोचा हुआ हमेशा कहां सच होता है! राधा के जीवन में भी एक ऐसी अनहोनी घट गई जिसके कारण इंजीनियर बनना तो दूर उसे आगे की पढ़ाई जारी रखना भी मुश्किल हो गया। दरअसल, एक दिन दुकान में काम करते-करते उसके पिता अचानक लकवे का शिकार हो गए और उनके शरीर के एक हिस्से ने काम करना बंद कर दिया। भरसक इलाज के बावजूद वह ह्वील चेयर तक ही सिमट गए। संकट की यह घड़ी राधा के जीवन की स्थाई पीड़ा बन गई और उसका सारा समय पिता की देखभाल और मां के साथ खेती किसानी में हाथ बंटाते हुए बीतने लगा।

पिता की बीमारी के कारण घर की स्थिति दिन-ब-दिन डांवाडोल हो रही थी। राधा के दिमाग में बराबर एक बात घूमती रहती थी कि घर की आर्थिक स्थिति कैसे संभाली जाए। वह ऐसा क्या काम करे कि सम्मान से दो जून के भरपेट खाने का इंतजाम हो जाए। इसी ऊहापोह में दिन गुजार रही राधा की नजर एक दिन अखबार में छपे एक विज्ञापन पर पड़ गई जिसमें बताया गया था कि केंद्र सरकार ने जरूरतमंद लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए देश में *मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्किल इंडिया* और *स्टैंड अप इंडिया* जैसी कई तरह की योजनाएं लागू की हैं जिनके तहत अपना कारोबार शुरू करने वाले जरूरतमंदों को कम ब्याज पर लोन आदि की सुविधा मिलती है। इसे देखकर राधा के मन में भी स्वरोजगार का सपना जगह बनाने लगा। वैसे भी बीमार पिता और असहाय मां को छोड़ वह

दूसरी किसी जगह नौकरी करने जा भी नहीं सकती थी और गांव में स्वरोजगार के अलावा कमाने का दूसरा कोई विकल्प था ही नहीं। राधा किसी सरकारी योजना के जरिए स्वरोजगार तो करना चाहती थी लेकिन उसे इस मामले में उसे किसी के मार्गदर्शन की जरूरत थी। वह यह सोचकर रूआंसी हो गई कि पिता स्वस्थ होते तो उनसे बढ़कर भला कौन उसकी मदद कर सकता था लेकिन वह तो लड़खड़ाती जुबान में जरूरत भर का संवाद कर पाने की स्थिति में भी नहीं थे। यह सोचते-सोचते उसे अचानक गांव के प्रधान चाचा का ख्याल आया जो जब-तब उसके पिता की खैर-खबर लेने घर आते रहते थे और उसे भी बहुत स्नेह करते थे।

फिर क्या था, सुबह होते ही राधा प्रधान चाचा के घर पहुंच गई। ''अरे बिटिया कैसे आना हुआ सुबह-सुबह! घर में सब ठीक तो हैं न।'' ''हां चाचा सब ठीक है'' कहते हुए राधा ने आने का कारण बताया तो उन्होंने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा कि ''बिल्कुल, तुम *स्टैंड अप* जैसी योजना के तहत बैंक से ऋण लेकर अपना कारोबार शुरू कर सकती हो।'' उत्साहित राधा ने *स्टैंड अप* योजना के बारे में विस्तार से जानना चाहा तो प्रधान चाचा ने बताया कि अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वंचित लोगों के साथ ही महिलाओं को अपना कारोबार शुरू करने के लिए इस योजना की घोषणा केंद्र सरकार द्वारा 15 अगस्त 2015 को की गई थी और उसके आठ महीने बाद 5 अप्रैल 2016 को अनुसूचित जाति और वंचित समाज के हितों की लड़ाई लड़ने वाले वरिष्ठ नेता बाबू जगजीवन राम की जयंती के मौके पर इसे लांच किया गया था। चाचा और विस्तार से समझाते हुए बोले कि *स्टैंड अप* का मतलब तुम जानती ही हो खड़े होना। इसीलिए अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े तबके के साथ ही महिला उद्यमियों को अपने पैरों पर खड़ा करना इस योजना का उद्देश्य है क्योंकि आज भी समाज में इनका एक बड़ा प्रतिशत इतना शोषित और पीड़ित है जो आत्मनिर्भर होने की सोच ही नहीं सकता है और कुछ तुम्हारे जैसे परिस्थितियों के मारे मजबूर लोग भी हैं जिनके लिए ऐसी योजनाएं वरदान होती हैं।'' 'जी चाचा' कहते हुए राधा ने जानना चाहा कि सरकार इस योजना के तहत किस रूप में और कितना कर्ज देती है तो चाचा ने बताया कि अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े लोगों के साथ ही महिलाओं को अपना कोई उद्यम या व्यवसाय शुरू करने के लिए टैक्स में विशेष छूट के साथ 10 लाख से एक करोड़ रुपये तक के ऋण की सुविधा इसके तहत दी गई है और सबसे निचली ब्याज दर संभवत: तीन प्रतिशत के हिसाब से इसे सात साल के भीतर संबंधित बैंक को लौटाना होता है। ''अरे वाह चाचा यह तो सरकार की बहुत ही नेक पहल है लेकिन अगर मैं *स्टैंड अप* योजना के तहत लोन लेना चाहूं तो मुझे तो पता ही नहीं कि किससे क्या बात करनी होगी''- कहते-कहते राधा उदास सी हो गई। ''अरे मेरे रहते तुझे किस बात की चिंता है बिटिया। तू तो बस यह सोच कि क्या कारोबार शुरू करेगी। बाकी लोन संबंधी औपचारिकता पूरी करवाने की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो।''

प्रधान चाचा की इस हौसला अफजाई के बाद तो राधा के अरमानों को जैसे पंख लग गए। वह बराबर सोच रही थी कि अगर *स्टैंड अप* योजना के तहत उसे लोन मिल गया तो वह ऐसा कौन सा काम शुरू करेगी, जिससे उसके साथ ही कुछ और लोगों को भी रोजगार मिल सके। कभी उसका ध्यान डेयरी, कभी कनफेक्शनरी तो कभी बागवानी और मशरूम की खेती जैसे कई कारोबारों पर

जाता लेकिन इनमें उसे लग नहीं रहा था कि उसका व्यवसाय ज्यादा विस्तार पाता। तभी उसकी नजर अपने बैठक वाले कमरे में मेज के नीचे बिछे खट्टियों पर हाथ से बुने उस पुराने कालीन पर पर पड़ी जो समय की धूल खाने के बाद भी अपनी अलग ही रंगत लिये था। मां ने उसे बताया था कि भेड़ की ऊन से बने इस कालीन को उसके पिता सालों पहले चमोली से तब लाए थे जब वह एक बार बद्रीनाथ गए थे। लेकिन बाजारवाद के चलते इस तरह के कई पारंपरिक लघु उद्योग अब पहाड़ में गिनती के रह गये हैं। राधा ने कालीन के कारोबार की बात प्रधान चाचा को बताई तो उन्हें यह सुझाव बहुत पसंद आया क्योंकि उनकी नजर में यह परंपरागत उद्योगों को फिर से बढ़ावा देगा। उन्होंने उसके साथ *प्योर वूल* के शाल का उद्योग शुरू करने का सुझाव भी राधा को दिया जो उसे भा गया।

फिर क्या था, कालीन के कारोबार के नाम पर बिना किसी झंझट के ऋण तुरंत पास हो गया। इस बीच जितने समय में कालीन उद्योग के लिए जरूरी उपकरण और कच्चा माल मंगाया गया, राधा कालीन बुनने की जानकारी हासिल करने के लिए चमोली के एक कालीन प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण लेकर आ गई। वहीं से वह इस हुनर में पारंगत दो कारीगरों को भी अच्छी तनख्वाह के वायदे के साथ गांव ले आई। शुरुआत में प्रचार में थोड़ा समय जरूर लगा लेकिन साल डेढ़ साल पूरा होते-होते उसके कारोबार को पहचान मिलने लगी और ऑर्डर आने लगे। इस बीच राधा ने अपने और आसपास के लड़के-लड़कियों को प्रशिक्षण देने का काम भी शुरू कर दिया और उसका कारोबार अच्छा चलने लगा। प्रधान चाचा को भी उम्मीद नहीं थी कि राधा की दिन-रात की मेहनत इतनी जल्दी ऐसा रंग ले आएगी कि तीन साल के भीतर ही वह बैंक के कर्ज का बड़ा हिस्सा चुका देगी। आज राधा कालीन के ही समानांतर प्योर ऊनी शाल का कारोबार भी शुरू कर अपने और आसपास के गांवों के सौ से ज्यादा लोगों को रोजगार देने वाली उद्यमी बन गई है। राधा की सफलता से प्रेरित होकर गांव के अन्य अनेक युवाओं ने भी सरकारी विकास योजनाओं का लाभ लेते हुए गांव से ही डेयरी, मशरूम, नगदी फसल, बागवानी, फूलों की खेती, मुर्गी पालन आदि अनेक प्रकार के लघु कुटीर उद्योग शुरू कर स्वरोजगार के जरिये न सिर्फ अपनी आर्थिक दशा सुधारी है बल्कि चार लोगों को नौकरी देकर नियोक्ता होने का गौरव भी हासिल किया है।

आज स्वरोजगार के कारोबार की जानकारी लेने जो कोई राधा के पास आता है तो वह उसे राय लेने के लिए प्रधान चाचा के पास भेजना नहीं भूलती क्योंकि उसके कारोबार को शुरू करने से लेकर उसे एक सफल व्यवसायी और नियोक्ता के पद पर आसीन करने तक में चाचा का ही सबसे बड़ा योगदान रहा है। इस रूप में चाचा स्वत: ही एक निशुल्क परामर्शदाता का ओहदा पा गये हैं लेकिन वह इसका श्रेय अंतत: राधा की लगन, मेहनत और निष्ठा को ही देते हैं क्योंकि इन सरकारी योजनाओं के बारे में तो वह न जाने कितनी बार कितने लोगों को बता चुके होंगे लेकिन उसका लाभ लेते हुए सफलता की ऊंचाई पर पहुंचना राधा का ही बूता था और वही प्रेरणा बनी है इस गांव के युवाओं की, जिन्होंने अपने गांव को तरह-तरह के नए पुराने लघु कुटीर उद्योग और काश्तकारी आदि के जरिए आत्मनिर्भर गांव का दर्जा दिला पूरे देश की प्रेरणा बना दिया है। ❑

–117, पत्रकार परिसर, सेक्टर-5,
वसुंधरा गाजियाबाद-201012

बेटियां सूरज की

–मनोहर चमोली 'मनु'

पौ फटते ही जाते हो और अंधेरा होने पर लौटते हो।

''हम अपनी मां को जानते तक नहीं।''

''हमारे नाम तक नहीं हैं।''

''हम बड़ी हो चुकी हैं।''

''हम लायक हैं। हमें काम चाहिए।''

''अब हम एक साथ नहीं रह सकतीं।''

बेटियां बोलती रहीं और सूरज चुपचाप सुनता रहा। जब वह चुप हुई तब सूरज बोला,''सुनो! तुम्हारी मां धरती है! वह यहां से बहुत दूर है। लेकिन वह, सिर्फ तुम्हारी ही मां नहीं है, उसकी अनगिनत संताने हैं।'' एक बेटी झट से बोल पड़ी,''हमें कुछ नहीं सुनना। बस, मां के पास जाना है।'' सूरज ने हामी भरी तो बेटियां आपस में लड़ने लगीं। सब चिल्लाने लगीं। पहले मैं-पहले मैं कहने लगीं। सूरज ने टोका, कहा,''अब समय आ गया है कि तुम सब अपनी जिम्मेदारियां समझो। अपने-अपने काम पर जुटो। अब सभी को मां के पास जाना है। लेकिन, एक साथ नहीं। सबका समय अलग-अलग होगा।'' यह सुनकर सब चुप हो गईं।

सूरज ने एक बेटी को पास बुलाया। कहा,''आज से तुम्हारा नाम शरद हुआ। मां से मिलोगी तो एक काम करोगी। वहां का मौसम सुहावना करोगी। वहां ठंडक लाओगी। पतझड़ लाओगी ताकि पेड़ों से पुराने पत्ते टूट कर अलग हो सकें।'' दूसरी बेटी सामने आई तो सूरज बोला,''तुम्हारा नाम हेमन्त हुआ। धरती घूमते हुए मेरा चक्कर लगाती है। चक्कर लगाते-लगाते वह जब मुझसे बहुत-बहुत दूर हो जाती है, तब तुम वहां की ठंड को और बढ़ाओगी। सेहत और खान-पान बढ़ाने के लिए तुम्हें याद किया जाएगा।''

तीसरी बेटी खड़ी हुई। बोली,''मेरा काम क्या होगा?'' सूरज ने मुस्कराते हुए जवाब दिया,''तुम शीत कहलाओगी। तुम जाड़ा लेकर पहुंचोगी। इतना जाड़ा कि पेड़-पौधे भी खड़े-खड़े सोने लगे। बहुत सारे जीव गहरी नींद के लिए धरती के भीतर छिप जाएं।''

चौथी बेटी हैरान थी। बोली,''मैं क्या करूंगी?'' सूरज कुछ पल ठहरा। बोला,''तुम्हें गरमी कहा

जाएगा। ठंड तभी जाएगी ,जब तुम मां से मिलोगी। तुम धरती पर ताप लाओगी।''

पांचवीं बेटी अब तक चुप थी। वह बोली,''मेरे लिए तो कोई काम ही नहीं बचा।''

सूरज ने कहा,''तुम्हारा नाम बारिश है। एक काम बचा है। वह तुम करोगी। तुम वर्षा लाओगी। प्यासी धरती और उनकी संतानों को तुम पानी दोगी। पेड़-पौधों और जीवों की जीवनदायिनी बनोगी।''

बेटियां नए नाम पाकर खुश थीं। सूरज बोला,''एक बार फिर से तुम्हारे नाम गिन लूं। शरद, हेमन्त, शीत, गरमी और बारिश! अरे! छठी कहां है?''

गरमी ने गरदन झटकते हुए बताया,''वो? वो तो सो रही होगी। मैं बुलाकर लाती हूं।'' थोड़ी देर में गरमी सबसे छोटी बहन को हाथ पकड़कर ले आई।

''मैंने इसे सब बता दिया है। पर यह तो रो रही है।'' गरमी ने बताया। वहीं छोटी बेटी आंखें मींच रही थीं। वह सुबकते हुए सूरज से बोली,''मुझे कोई प्यार नहीं करता। आप भी नहीं। तभी तो मेरा नाम तक नहीं रखा गया। और तो और, मेरे लिए कोई काम भी नहीं बचा?'' यह कहकर वह जोर-जोर से रोने लगी। शरद, हेमन्त, शीत, गरमी और बारिश उसे चुप कराने लगीं। लेकिन वह थी कि सुबकती ही जा रही थी। तब सूरज ने उसे सहलाया। पुचकार कर। कहा, ''रोओ मत! तुम वसंत कहलाओगी। सब तुम्हारा इंतजार करेंगे। तुम्हारा स्वागत धूमधाम से होगा। तुम धरती पर हरियाली लाओगी। रंग-बिरंगे फूल खिलाओगी। तुम्हारे आते ही तितलियां फूलों पर मंडराएगी। तुम सभी ऋतुओं की सिरमौर कहलाओगी।'' वसंत की हिचकियां कम हुई। उसने सुबकना कम किया तो सभी बहनें एक साथ बोलीं, ''जाओ। सबसे पहले तुम जाओ।''

वसंत ने सूरज को अलविदा कहा। अब वह मां से मिलने चल पड़ी। धरती ने वसंत का स्वागत किया। वसंत के आते ही धरती हरी-भरी हो गई। सरसों के पीले फूल सोने की तरह चमकने लगे। कहते हैं, तभी से वसंत, शरद, हेमन्त, शीत, गरमी और बारिश धरती पर बारी-बारी से आती हैं। यह छह बहनें ही धरती का मौसम बदलती हैं। ❑

-मनोहर चमोली 'मनु' गुरु भवन, निकट डिप्टी धारा, पौढ़ी गढ़वाल 246001 उत्तराखंड

गुणकारी वनस्पति
तुलसी

अंतरा वैष्णवी

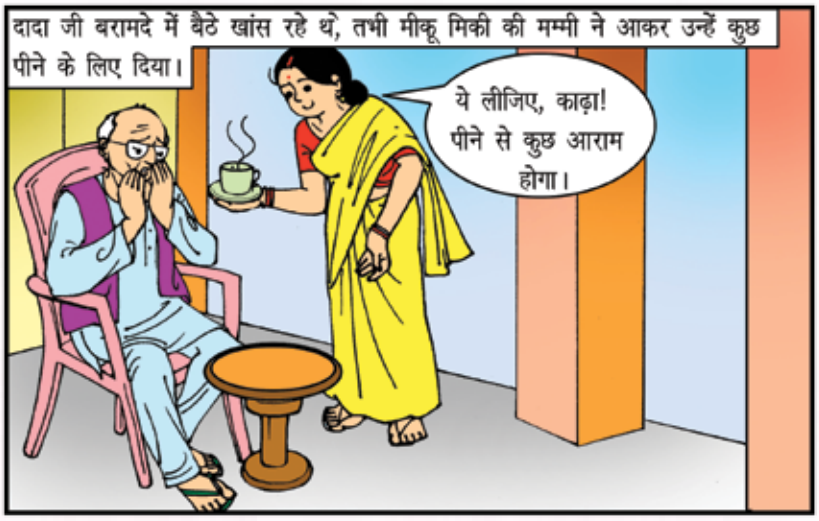

तुलसी का असल नाम ऑसीमम सैक्टम है। यह औषधीय पौधा है। यह झाड़ी के रूप में उगता है और 1 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली हल्के रोएँ से ढकी होती हैं। इसकी पत्तियाँ 1 से 2 इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती हैं।

पुष्प अति कोमल एवं 8 इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले बहुत छोटे हृदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीले रंग के छोटे काले चिह्नों से युक्त अंडाकार होते हैं। नए पौधे मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में उगते है और शीतकाल में फूलते हैं। पौधा सामान्य रूप से दो-तीन वर्षों तक हरा बना रहता है।

तुलसी की सामान्यतः कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं- ऑसीमम अमेरिकन (काली तुलसी) गम्भीरा या मामरी, ऑसीमम वेसिलिकम (मरुआ तुलसी) मुन्जरिकी या मुरसा, ऑसीमम वेसिलिकम मिनिमम, आसीमम ग्रेटिसिकम (राम तुलसी, वन तुलसी, अरण्यतुलसी), ऑसीमम किलिमण्डचेरिकम (कर्पूर तुलसी), ऑसीमम सैक्टम और ऑसीमम विरिडी।

ऑसीमम सैक्टम को प्रधान या पवित्र तुलसी माना गया जाता है। इसकी भी दो प्रधान प्रजातियाँ हैं- श्री तुलसी जिसकी पत्तियाँ हरी होती हैं तथा कृष्णा तुलसी जिसकी पत्तियाँ निलाभ-कुछ बैंगनी रंग लिए होती हैं।

गुण, धर्म की दृष्टि से काली तुलसी को ही श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि दोनों ही गुणों में समान हैं।

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं, जिनमें ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख हैं। अभी भी पूरी तरह से इनका विश्लेषण नहीं हो पाया है। इसमें 0.1 से 0.3 प्रतिशत तक तेल पाया जाता है। 'वैल्थ ऑफ इंडिया' के अनुसार इस तेल में लगभग 71 प्रतिशत यूजीनॉल, बीस प्रतिशत यूजिनॉल मिथाइल ईथर तथा तीन प्रतिशत कार्वाकोल होता है।

श्री तुलसी में श्यामा की अपेक्षा कुछ अधिक तेल होता है तथा इस तेल का सापेक्षिक घनत्व भी कुछ अधिक होता है। तेल के अतिरिक्त पत्तियों में लगभग 83 मिलीग्राम प्रतिशत विटामिन सी एवं 2.5 मिलीग्राम प्रतिशत कैरीटीन होता है। तुलसी बीजों में हरे पीले रंग का तेल लगभग 17.8 प्रतिशत की मात्रा में पाया जाता है।

तो इतनी गुणकारी है हमारी पूजनीय तुलसी!

वाह! तब तो मैं रोज नहा-धोकर तुलसी में एक लोटा पानी डालूंगा!

...और मैं भी!

समाप्त.

विश्व पृथ्वी दिवस

समृद्ध धरती का मूलमंत्र

–विजय के. सिंह

समृद्ध धरती का मूलमंत्र, समझे और समझाएं
इसकी रक्षा वास्ते, जल बचाएं, तेल बचाएं, पेड़ लगाएं।

धूल, धुंआ, जहरीली गैसें, पी जाता है सारी
पेड़ ऑक्सीजन देकर, रक्षा करे हमारी।

पानी कुदरत का 'सफेद सोना', पेड़ 'हरा सोना'
और तेल है 'काला सोना'
करें न इनको खत्म
अगर हुए ये समाप्त तो
हम भी हो जाएंगे खत्म।

जल, पेड़, तेल की गरिमा बहुत ही न्यारी
इनकी देख-भाल, रक्षा की सबकी जिम्मेवारी।

एक बूंद पानी, एक बूंद तेल और
एक वृक्ष की भी होती महत्ता
कभी ये भूल न पाएं
आती पीढ़ियां कोसे न हमको
आइए, सबकी बचत करते जाएं।

प्रकृति का वरदान मनुष्य है
भूल न पाए ये जग सारा
जल बचाएं, तेल बचाएं, देश बढ़ाएं
यही संदेश हमारा।

–1385/13, गोविन्दपुरी, कालका जी, नई दिल्ली-110019

नए ग्राहक बनने/सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की सूचना के लिए कूपन में बाल भारती

- ❑ ₹ 160 में एक वर्ष
- ❑ ₹ 300 में दो वर्ष
- ❑ ₹ 420 में तीन वर्ष
- ❑ विशेषांक : ₹ 20

के लिए मंगाना चाहता/चाहती हूं। मैं उचित राशि का डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं.....दिनांक.....भेज रहा हूं/रही हूं।

(उचित बॉक्स पर निशान लगाएं)

- मेरी वर्तमान सदस्यता .....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष का शुल्क ऊपर दिए विवरण के अनुसार भेज रहा/रही हूं।
- मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका नीचे दिए पते पर भेजें।

(जो पंक्तियां लागू न हों, उन्हें काट दें)

हस्ताक्षर.....

नाम.....

पता.....

.....

.....

मोबाइल नं. .....

ई-मेल आईडी : .....

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक/संस्था/अन्य

सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की स्थिति में बॉक्स में अपनी सदस्यता संख्या लिखें....

- डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के नाम सदस्यता कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :

विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग,
कमरा संख्या 48-53, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड नई दिल्ली-110003

- पत्रिका मंगाने के लिए आप अपने समाचार पत्र विक्रेता से भी संपर्क कर सकते हैं।

विक्रय केंद्र : प्रकाशन विभाग

नई दिल्ली : सूचना भवन, सी.जी.ओ. कांप्लेक्स, लोदी रोड, दूरभाष : 011-24367260, **लखनऊ** : हाल नं. 1, दूसरी मंजिल, केंद्रीय भवन, अलीगंज, दूरभाष : 0522-2225455, **कोलकाता** : 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, दूरभाष : 33-22488030, **पटना** : बिहार रा. सह. बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, दूरभाष : 0612-2683407, **मुंबई** : 701 बी-विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन बेलापुर, नवी मुंबई, दूरभाष : 9522-27570686, **बंगलुरु** : एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरमंगला दूरभाष: 080-25537244, **हैदराबाद** : कमरा नं. 204, द्वितीय तल, सी.जी.ओ. टॉवर्स, कावाडि गुडा-500080, **चेन्नई** : राजाजी भवन, बेसेंट नगर, दूरभाष : 044-24917673, **तिरुअनंतपुरम** : गवर्मेंट प्रेस के निकट, दूरभाष : 041-2330650, **गुवाहाटी** : पेंशन पारा रोड, हाउस नं. 4, पी.ओ. शिलपुकरी-3

माथा-पच्ची

देवांशु वत्स

द कॉमन थिंग!

दोस्तों, ये चार उपग्रहों की तस्वीरें हैं। पर क्या तुम बता सकते हो कि इन चारों में कौन-सी एक बात कॉमन है?

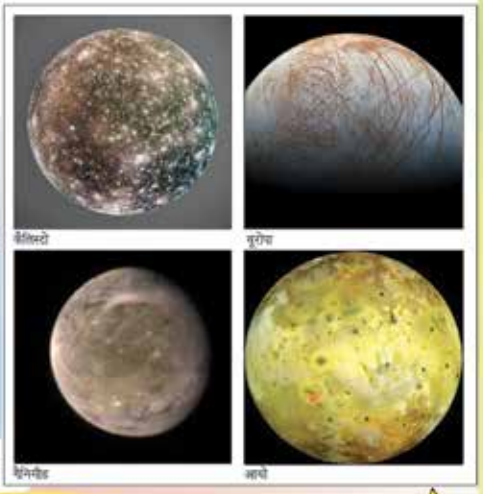

शब्द गोल

संकेत के आधार पर सही उत्तर लिखो।
सभी शब्दों का आखिरी अक्षर 'ण' होगा।

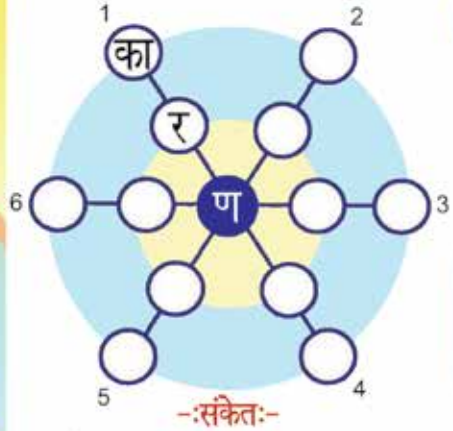

-:संकेत:-

1. हेतु, सबब। 2. एक दिशा का नाम।
3. मंदोदरी का पति व कुंभकरण का भाई।
4. मृत्यु, पंचतत्त्व। 5. आश्रय, रक्षा, घर।
6. हरना, दूर करना।

उलझ गए!

पड़ोसी चाचा ने साथ आए व्यक्ति के बारे में राजू से बताया,-'यह मेरे चाचा के मामा के दामाद की पत्नी की बुआ का पोता है।' पड़ोसी चाचा और उस व्यक्ति में क्या रिश्ता है?

पहेलियों के उत्तर

शब्द गोल : 1. कारण, 2. दक्षिण, 3. रावण, 4. मरण, 5. शरण, 6. हरण।

उलझ गए : पड़ोसी चाचा व उनके साथ आया हुआ व्यक्ति आपस में चचेरे भाई के हैं।

द कॉमन थिंग : तस्वीरें में दिए गए सभी उपग्रह वृहस्पति ग्रह के हैं।

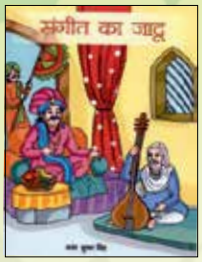

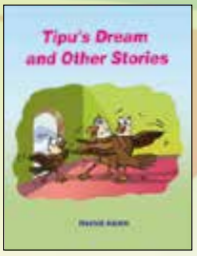

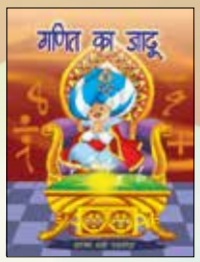

हमारे प्रकाशन

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

website : publicationsdivision.nic.in

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260, 24365610
ई-मेल : businesswng@gmail.com

पुस्तकें आनलाइन खरीदने के लिए bharatkosh.gov.in पर लॉग इन करें

ट्विटर पर फॉलो करें @ DPD_India

चुनिंदा पुस्तकें ईबुक के रूप में भी उपलब्ध इसके लिए amazon.in play.google.com पर जाएं

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) – 05/3214/2018-20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)-51/2018-20
08 मार्च, 2020 को प्रकाशित • 18-19 मार्च 2020 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

प्रकाशक व मुद्रक : ईरा जोशी, प्रधान महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : **इंडिया ऑफसेट प्रैस,** ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली। वरिष्ठ संपादक : आभा गौड़